सत्यमेव जयते

मरुलेखा वातायन

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
DEDICATED TO TRUTH IN PUBLIC INTEREST

वर्ष : 23 अर्द्धवार्षिक पत्रिका अंक : 67

गढ़ीसर झील : जैसलमेर

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
राजस्थान, जयपुर

सत्यमेव जयते

डी.पी. यादव
महालेखाकार (लेखा व हक.)
राजस्थान, जयपुर

❊ संरक्षक की कलम से ❊

हमने गत दिनों हिंदी समारोह तथा महात्मा गांधी जी की 150वीं जयन्ती की खुशियां मनाईं। हिंदी और गांधी जी का एक अटूट रिश्ता था। आज हिंदी राजभाषा के रूप में स्थापित है तो उसमें गांधी जी का बहुत बड़ा हाथ है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में अपने जोशीले वक्तव्य हिंदी में ही दिए। आजादी की लड़ाई में सबको एक साथ, एक जुट रखने में हिंदी का बहुत बड़ा हाथ है। कहा भी गया है कि हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है इसलिए हिंदी समारोह एक ऐसा समारोह है जो हम सभी को अपना समारोह लगता है क्योंकि हिंदी हमारी भाषा है। हिंदी भाषा हम बचपन से बोलते आए हैं। देश की शीर्ष 10 भाषाओं में हिंदी बोलने वालो की संख्या में निरन्तर वृद्धि ही हो रही है। दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक भाषा है। इन्टरनेट पर भी सबसे तेज गति से हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। दुनिया में हमारे देश का प्रभाव बहुत ज्यादा बढ रहा है इसलिए दुनिया में हिंदी भाषा का भी तेजी से विस्तार हो रहा है क्योंकि यह हमारे देश की सम्पर्क भाषा है, राजभाषा है।

सितम्बर माह में हमारे कार्यालय परिसर में हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया। उसमें आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने बेहद उत्साह से भाग लिया तथा आप में से कई विजेता भी बनें उन्हें मेरी ओर से हार्दिक बधाई तथा कुछ इस बार पुरस्कृत श्रेणी में नहीं आ पाए उन्हें निराश होने की जरूरत नहीं, वे आगामी वर्ष निश्चित ही पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की श्रेणी में होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

हमारे यहां हिंदी में काफी अच्छा काम हो रहा है इसे निरन्तर बढाने की जिम्मेदारी हम सबकी है जिसे निश्चित ही हम निभाएंगे। अंत में पुनः आप सभी को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

डी.पी. यादव

सत्यमेव जयते

मरुलेखा

वातायन

वर्ष : 23 अंक : 67

महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

जुलाई-2019 से दिसम्बर-2019

प्रकाशक :

महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

राजस्थान

जयपुर – 302 005

मरुलेखा वातायन

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान की अर्द्धवार्षिक पत्रिका

संपादक मण्डल

*** संरक्षक ***

श्री डी.पी. यादव

महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

परामर्शदाता

श्री सोहन लाल साहू

उप–महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदाता

सुश्री प्रीति आर जैन

उप–महालेखाकार (लेखा)

प्रधान संपादक

श्री जय सिंह रैगर

कल्याण अधिकारी

प्रबन्ध सम्पादक

श्री मुरलीधर भगत

व. लेखाधिकारी

संपादक

श्रीमती रीतिका मोहन

हिन्दी अधिकारी

सह–संपादक

श्री अनिल कुमार

डाटा ऐन्ट्री ऑपरेटर

सह–संपादक

श्री ओम प्रकाश डोई

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

* अनुक्रमणिका *

क्र.सं.	शीर्षक		रचनाकार	पृष्ठ सं.
	संरक्षक की कलम से			
	संपादकीय			5
	आपके पत्र			6
	गृहमंत्री का संदेश			11
1.	मनुष्य जीवन में प्रकृति का अहम योगदान	लेख	लहरी प्रसाद	13
2.	माटी की महक	कहानी	मुरलीधर भगत	15
3.	पत्र प्रारूप लेखन	लेख	बालकृष्ण शर्मा	17
4.	सृजनशील कथाकार के दर्शन की श्रृंखला : काल चिंतन	संकलन	रीतिका मोहन	21
5.	पन्ना धाय	लेख	इति शर्मा	24
6.	व्यथा	कहानी	भारत भूषण शर्मा	26
7.	मानवता का धर्म	कहानी	सरला भगत	29
8.	क्रान्तिवीर चन्द्रशेखर आजाद	लेख	मदनलाल कोली	31
9.	नन्हीं सी चिड़िया	बाल कविता	कविता	37
10.	अभिभावक बच्चों को प्रतिस्पर्धी के स्थान पर प्रगतिशील बनाएं	लेख	पदम चन्द गाँधी	38
11.	गीत	कविता	डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'	40
12.	सिसकती जिन्दगी	कहानी	हर्षित मोहन	42

13.	छोटू–एक बजरी तोता	कहानी	ध्रुव नौटियाल	44
14.	गंगा ही परम गति है	लेख	बनवारी लाल सोनी	48
15.	योग	कविता	रामानन्द	50
16.	सोचो	कविता	तुलसी राम धाकड़	52
17.	हिंदी पखवाड़ा–2019		राजभाषा कक्ष	55
18.	हिन्दी पखवाड़ा–2019 के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके परिणाम		राजभाषा कक्ष	56
19.	पुरस्कृत रचनाकार		राजभाषा कक्ष	57
20.	सरकारी कामकाज मूलरूप से हिंदी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत कार्यालयकर्मी		राजभाषा कक्ष	58
21.	विभागीय खेलकूद गतिविधियां			59
22.	वर्ष 2019 में सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची			59
23.	मुख व अंतिम पृष्ठ के छायाचित्र के छायाकार		देवराज खत्री	

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की अभिव्यक्ति से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

संपादकीय

विभागीय हिन्दी पत्रिका के इस 67वें अंक का प्रकाशन, हमारे रचनाकारों/समीक्षकों द्वारा निरन्तर हमारे कदम से कदम मिला कर चलने से ही संभव हो पाया। इसके लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस छमाही (जुलाई, 2019 से दिसम्बर, 2019) के सितम्बर माह में समस्त कार्यालयों द्वारा हिन्दी समारोह मनाया गया, विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, कार्मिकों को पुरस्कृत भी किया गया। हमारे कार्यालय परिसर में भी हर्षोल्लास से हिन्दी पखवाड़ा समारोह मनाया गया।

जहां तक मेरी व्यक्तिगत राय है कि हिन्दी समारोह मनाने की सार्थकता तब सिद्ध होती है जब प्रत्येक कार्मिक अपने स्वयं से यह वादा ले कि वह राजकाज में तो शत प्रतिशत हिन्दी का प्रयोग करेगा ही लेकिन अपने व्यक्तिगत जीवन में भी चाहे अनगिनत भाषाएं सीखे लेकिन राजभाषा/सम्पर्क भाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में कोई कमी नहीं छोड़ेगा क्योंकि अपनी भाषा को उसका सही स्थान दिलाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। श्री भगवती कुमार शर्मा जी ने भी कहा है कि– ''हम संकुचित और संकीर्ण न बनें। विश्वसाहित्य और विश्वसंस्कृति की दिशाओं की सभी खिड़कियां और दरवाजे खुले रखें लेकिन इसके साथ ही अपनी भाषा/मातृभाषा की अवगणना न करें। पहाड़ की पूजा करें लेकिन अपनी चौखट की पूजा करना न भूलें।''

रीतिका मोहन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा. एवं सा.क्षे.ले.प.)
राजस्थान, जनपथ, जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 66वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण उच्च कोटि का है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के प्रथम एवं अंतिम पृष्ठों पर बने छायाचित्र काफी भव्य एवं आकर्षक हैं एवं राजस्थान की सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विरासत का बखान करते हैं। अन्य अंको की तरह यह अंक भी रुचिकर है एवं इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे.ले.प.) राजस्थान,
जनपथ, जयपुर

कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्ध-वार्षिक पत्रिका मरुलेखा वातायन के 66वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव की कविता 'पानी', तथा सुश्री इति शर्मा द्वारा लिखित लेख 'सफलता का आधारः वाक् चातुर्य' में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को बौद्धिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर चित्तौड़ किले के चित्र के माध्यम से राजस्थानी परम्परागत संस्कृति की रमणीय छटा को गहनता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर

हमें आपके विभाग की पत्रिका का 66 वां अंक (जनवरी 2019 – जून 2019) प्राप्त हुआ। पत्रिका में शामिल आलेख 'स्वामी विवेकानंद का सफर', 'सफलता का आधार : वाक् चातुर्य', 'मरूस्थल का आस्था स्थल : ददरेवा' 'देवी स्वरुप और वाहन' के साथ-साथ अन्य रचनाएं भी काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। पत्रिका में शामिल कविताएं भी कम शब्दों में महत्वपूर्ण मानवीय मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरे संपादक मंडल को हमारी ओर से सराहना भाव पहुचाएं एवं बधाई स्वीकार करें।

महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय, चेन्नै

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''मरूलेखा वातायन'' के 66 वें अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के विषय हृदयस्पर्शी हैं। विशेषत: 'बहादुर कमला', 'सफलता का आधार : वाक् चातुर्य', कविता 'पहचान', 'पानी', 'जाग्रत हो अब' रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सुंदर हैं। पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 66वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण, साज-सज्जा व मुद्रण भी अति उत्तम है। सुश्री इति शर्मा, लेखाकार का लेख 'सफलता का आधार : वाक् चातुर्य' व श्री पदम चन्द गाँधी, आमंत्रित रचनाकार का लेख 'बच्चों के मानसिक दबाव के लिए जिम्मेदार कौन' श्री तुलसी राम धाकड़, आमंत्रित रचनाकार की कविता 'जाग्रत हो अब' अत्यंत ही प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्द्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

अंतरिक्ष विभाग, अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, आंबावाड़ी विस्तार डाकघर, अहमदाबाद

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''मरूलेखा वातायन'' का 66वां अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। कार्यालय में हो रहे हिंदी कार्यान्वयन और अन्य समाचारों की पत्रिका में सुंदर प्रस्तुति की गई है। आशा करते हैं कि आपके कार्यालय की पत्रिका; राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन को इसी प्रकार नया आयाम देती रहेगी। पत्रिका का मुद्रण अत्यंत आकर्षक एवं मनोरम है। ''सफलता का आधारः वाक् चातुर्य'' तथा ''स्वामी विवेकानन्द का सफर'' जैसी रचनाएं रूचिकर एवं सराहनीय हैं।

अर्द्धवार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका ''मरूलेखा वातायन'' के सफल प्रकाशन हेतु बधाई।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.)
पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'मरूलेखा वातायन' का 66वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की संपूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी आकर्षक है। सम्पादक मण्डल द्वारा किया गया यह प्रयास वास्तव में सराहनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा लेखा–परीक्षा विभाग,
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 66वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज–सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री बाल कृष्ण शर्मा का ''स्वामी विवेकानन्द का सफर'' जिसमें विवेकानन्द के जीवन का उल्लेख संक्षेप में किया गया है, उल्लेखनीय है। इति शर्मा का लेख ''सफलता का आधार : वाक चातुर्य'' सही समय पर सही बात करने की महत्ता बताता है। साथ ही, श्री मदन लाल कोली का ''मरूस्थल का आस्था स्थल – ददरेवा'' में राजस्थान के विभिन्न स्थलों का वर्णन काफी खूबसूरती से किया गया है।

कहानियों में श्री अजय कुमार नौटियाल की ''बहादुर कमला'' रोचक होने के साथ–साथ दृढ–निश्चय की महत्ता को भी बताती है। श्री रामानन्द जी की कहानी ''सौ के तीन'' उल्लेखनीय है। कविताओं में श्री शंकरलाल जी की कविता ''पहचान'', श्री बनवारी लाल सोनी की ''भारतीय संस्कृति में सूर्य'', तथा डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक' की कविता ''गीत'' आदि समेत सभी कवितायें अत्यन्त ही उत्कृष्ट व प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग,
महानिदेशक लेखा परीक्षा का कार्यालय
पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के 66वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी की सेवा करने के लिए आपके कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र एवं पत्रिका की साज-सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेष रूप से बच्चों के मानसिक दबाव के लिए जिम्मेदार कौन प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और स्वर्णिम भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) म.प्र.
भोपाल

आपके कार्यालय की पत्रिका ''मरूलेखा वातायन'' प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर स्वामी विवेकानंद का सफर, पहचान, जाग्रत हो अब जन-भावना, पानी आदि रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय हैं।

पत्रिका का प्रवाह इसी प्रकार निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना है।

सत्यमेव जयते

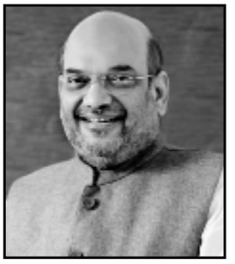

अमित शाह
AMIT SHAH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियों!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं!

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले। उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली कंठस्थ का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-

साधारण के लिए लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं!

जय हिंद !

अमित शाह

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

हिन्दी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।

–डॉ. जाकिर हुसैन

मनुष्य जीवन में प्रकृति का अहम योगदान

लहरी प्रसाद
वरिष्ठ लेखाधिकारी

प्रकृति मानव की सहयोगिनी रही है। मानव आज अपने स्वार्थ में इसके संतुलन को बिगाड़ रहा है जो आगे आने वाली पीढ़ी के लिए नुकसानदायक है। प्रकृति का मानव के जीवन में बहुत महत्व है। हम आदि मानव के रूप में हमारी जरूरत की सभी चीजें प्रकृति से ही ग्रहण करते आ रहे हैं। पूर्व में जब मनुष्य जीवन यापन करता था तब भी सभी चीजें प्रकृति से ही प्राप्त करता था। आज जब हमको ज्ञान प्राप्त हो गया और हम विज्ञान की ऊँचाइयों को छू रहे हैं तब भी हमारी आवश्यकता की चीजों की पूर्ति प्रकृति से ही होती है। प्रकृति को इसीलिए ''माता'' कहा जाता है क्योंकि यह हमारा पालन पोषण करती है। अनंत काल से यह हमारी सहचरी रही है। प्रकृति का मनुष्य जीवन में इतना महत्व होते हुए भी हम अपने लालच के कारण उसका संतुलन बिगाड़ रहे हैं।

धरती पर जीवन की शुरूआत और जीवन को चलाएमान रखने का काम प्रकृति की बड़ी कठिन प्रक्रिया है। प्रकृति की हर चीज अमूल्य है। हर जीव का अपना महत्व है। वनस्पति से लेकर जीवाणुओं, कीड़े-मकोड़ों और मानव की जीवन प्रक्रिया को चलायमान रखने में सबका अपना अपना योगदान रहा है।

मानव जीवन के लिए प्रकृति में हवा और पानी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहना चाहिए। इसके साथ साथ अनेक प्रकार के जीव जंतु व वनस्पतियां भी बनी रहनी चाहिएं। समस्त भोजन मिट्टी के अंदर छुपा रहता है जिसे खाद्य पदार्थ के रूप में निकालने का काम वनस्पति करती है। जिसमें सूर्य की किरणें उसकी मदद करती हैं। वनस्पति जैसे घास, पत्ती, फल, फूल को खाकर शाकाहारी जीव जिंदा रहते हैं और शाकाहारी जीवों को खाकर मांसाहारी जीव जिंदा रहते हैं और अंत में जीवों के मृत शरीर मिट्टी के अंदर सड़कर उसके उपजाऊपन को बनाए रखते हैं। उस उपजाऊ मिट्टी में फिर वनस्पति पैदा होती जाती है और इस तरह जीवन चक्र चलता रहता है।

पेड़-पौधे, तेज हवा और बारिश में मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। पेड़-पौधे और वनस्पति बर्खा (वर्षा) लाने और मौसम चक्र को ठीक बनाए रखने में सहायता करते हैं। पानी को अपनी जड़ों में रोक कर पूरा साल बहने वाले झरने, नदी नालों के जल को संरक्षित करने का काम भी करते हैं और कार्बनडाईऑक्साइड ग्रहण कर ऑक्सीजन को विसर्जित करते हैं। दूसरे शब्दों में प्रकृति सारे जीवन चक्र को चलाने में सबसे अहम भूमिका निभाती

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है। **– चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

है। इस प्रकार प्रकृति में मौजूद हर चीज का अपना महत्व है और वह हमारे जीवन को प्रभावित करती है। यदि कोई एक चीज भी समूल नष्ट हो जाये तो उसका प्रभाव पूरे जीवन चक्र पर पड़ता है हमें इसके महत्व को समझने की बहुत आवश्यकता है।

विधाता अर्थात सृष्टि के रचयिता ने आदमी को असीमित क्षमता इसलिए नहीं दी है कि वह उसकी रचना को बदल देने का प्रयास करे। आज कई क्षेत्रों में ऐसा ही हो रहा है। संसार के व्यापक विनाश का सामान जुटाने से लेकर मनुष्य नियंता की सत्ता को ही चुनौती देने लगा है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है और जीव-जंतुओ के अस्तित्व को मिटाने की कोशिश की जा रही है। वनों का तेजी से कटाव होने के कारण वन खत्म हो रहे हैं। उद्योगों की स्थापना तथा ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति के लिए प्रकृति का असंतुलन बढने के खतरे की भी परवाह नहीं की जा रही है। इसके शुरूआती दुष्परिणाम मनुष्यों के साथ जीव जंतुओं के बढ़ते संघर्ष के रूप में भी देखे जा सकते हैं। यही स्थिति रही तो हमारी आनेवाली पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय होगा।

प्रकृति में असंतुलन के कारण आज मौसम जिस तरह से बदल रहा है उसका नतीजा बहुत भयावह हो सकता है। यदि प्रकृति का व्यवहार इस तरह अप्रत्याशित होता गया तो भविष्य में न कृषि हो पाएगी, न उद्योग पनप पाएँगे। प्राकृतिक संसाधन भी अब धीरे-धीरे खत्म हो चले हैं।

अतः आज यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम हर उन गतिविधियों पर रोक लगायें जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। तभी हम अपनी आनेवाली पीढ़ी को एक सुरक्षित भविष्य दे पाएँगे।

अपनी मातृभाषा बंगला में लिखकर मैं 'बंगबंधु' हो गया किन्तु 'भारतबंधु' मैं तभी हो सकूंगा जब भारत की राष्ट्रभाषा में लिखूंगा।

– बंकिम चंद्र चटर्जी

माटी की महक

मुरलीधर भगत
व.लेखाधिकारी

आज उर्मि के पाँव जमीं पर नहीं पड़ रहे थे। दौड़-दौड़ के कभी यहाँ तो कभी वहाँ काम कर रही थी। तकिया, खोली, कुशन कवर, मसन्द, चद्दरें और पर्दे सभी कुछ सुम्मी के पसन्द के बिछाए जा रहे थे। ताजे फूलों के गुलदस्ते, छोटे-छोटे बल्बों की झालर, हल्की-हल्की घंटियों की खनक वाला विंडचाइम और उर्मि की चहक मेरे घर को नई नवेली दुल्हन सी होने का आभास करवा रही थी।

''अजी सुनते हो'' सामान की लिस्ट बना दी है, आज शाम तक सब सामान आ जाना चाहिए, कोई बहाना नहीं चलेगा, कैसे, कब और कहाँ से लाना है ये आपको ही देखना है। मैं साथ नहीं चल पाउंगी। उर्मि ने ऐलान कर दिया कि मेहमानों के आने तक घर साफ सुथरा रखना है। कहीं कोई गन्दगी नहीं चलेगी। अनुशासन के नियमों का पाठ एक बार फिर से पढ़ा दिया गया।

सुम्मी उर्मि के बचपन की सहेली थी। दोनों ने साथ-साथ स्कूल और कॉलेज की पढाई की थी, फिर सुम्मी विवाह उपरान्त विदेश में इंजीनियर पति के साथ चली गई थी। जीवन की उठा पटक में दोनों सहेलियाँ अपने-अपने जीवन में व्यस्त हो गई। एक अर्से के बाद फेसबुक के जरिये पुनः रिश्ता जीवन्त हो गया।

सोने पे सुहागा तब हुआ जब उर्मि को पता चला कि सुम्मी अपने नजदीकी रिश्तेदार के यहाँ विवाह में भारत आ रही है और दो दिन जयपुर आकर हमारे यहाँ ही रूकने का प्लान है।

उर्मि द्वारा मेहमानों के लिए बनाई जाने वाली इंडियन मसालेदार व्यंजनों की लिस्ट देख मैंने उर्मि से कहा, ''तुम्हारी सखी विदेश में रच बस गई है। वहां कम घी और कम मसालेदार चीजें खाई जाती हैं। तुम भी वही सब पिज्जा, बर्गर, चाईनीज व कान्टीनेंटल व्यंजन ही बनाकर खिलाना।'' परन्तु सुम्मी को तो आलू के पराठे, आलू की टिकिया, छोले भटूरे, पानी पताशी सभी बहुत पसन्द थे। हाँ लेकिन आप सही कह रहे हैं, विदेश में तो खान पान, रहन-सहन सभी कुछ बदल जाता है कहते हुए उर्मि कहीं खो सी गई।

हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में एक है। भारत को समझने के लिए हिंदी ज्ञान अनिवार्य है। हिंदी का महत्व आज इसलिए और भी बढ़ गया है क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग और तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।

– डॉ. मैग्रेशर (इंग्लैंड)

आखिर सुम्मी अपने पति राजेन्द्र जी के साथ आ ही गई। दोनो सहेलियाँ बरसों बाद मिल कर बेहद खुश थीं।

सुबह के नाश्ते में सैंडविच, फल और पिज्जा फिर दोपहर में हल्का-फुल्का खाना और शाम को शॉपिंग के बाद हल्के फुल्के स्नेक्स और कॉफी (जैसा कि चर्चा होती कि विदेशों में ये सब ही परोसा जाता है।) परोसने की योजना बनाई गई।

अगले दिन जैसे ही सुम्मी नहा कर विदेशी परफ्यूम लगाकर डाइनिंग टेबल पर आकर बैठी तो राजेन्द्र जी ने प्यार से सु डार्लिंग गुडमार्निंग कहा तो उर्मि मेरी ओर मुस्करा कर देखने लगी क्योंकि मैं तो उर्मि को प्रिंस की मम्मी कहकर बुलाता हूं।

सुम्मी बोलीं, उर्मि डियर विदेश में रहकर बनावटी जीवन से उब गई हूं। वहाँ का रहन सहन और उबला खाना खा-खाकर जुबान ही फीकी हो गई है। यहाँ की माटी की महक और मसालेदार जायकों के लिए तो मैं तरस ही गई थी। सोचा था कि दो दिन तू तो मेरी पसन्द का खाना खिलाएगी तो पुरानी यादें ताजा हो जाएगी।

उर्मि तू ऐसा कर आज के नाश्ते में गरमा गरम आलू परांठा - दही, लंच में राजमां चावल, दही-भल्ले और मिठाई में, तेरे हाथों से रसमलाई बना ले।

उर्मि तो बस देखती ही रह गई कि ये तो वही सुम्मी है और सुम्मी का तो खुशी से हाल बेहाल था।

उर्मि तुरन्त किचन में गई। प्रेशर कुकर में आलू उबालने रखते हुए मुझे बोली कि सुनोजी, हम भारतीय चाहे संसार के किसी भी कोने में चले जाएं परन्तु अपने देश के रीति-रिवाज, खान-पान, जीने का अंदाज और माटी की महक कभी नहीं भूलते।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य तिलक

पत्र प्रारूप लेखन

बालकृष्ण शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

मानवीय भावनाओं एवं विचारों के आदान-प्रदान का सस्ता एवं सशक्त माध्यम है– पत्र लेखन। पत्र हमारे जीवन का दर्पण है जिसमें लेखक का वास्तविक रूप दिखाई देता है। इसमें उसकी भावनाएँ, आकांक्षाएँ, उसके विचार, कार्यकलाप, मानसिक प्रगति तथा अन्य वृत्तियाँ स्पष्ट प्रतिबिंबित होती हैं। इसके माध्यम से विचार-विनिमय करने से एक प्रकार का मानसिक संतोष प्राप्त होता है जो कि अन्य किसी भी माध्यम से संभव नहीं है।

पत्र-लेखन एक विशेष कला है। एक अच्छे पत्र की विशेषता होती है कि कम शब्दों में अपने विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया हो। पत्र ऐसा हो कि उसे पढ़ने वाले पर अनुकूल प्रभाव पड़े। पत्र की भाषा सरल व सुगम होनी चाहिए। पत्र की प्रयुक्त भाषा में शिष्टता एवं विनम्रता का विशेष स्थान होना चाहिए। पत्र की शैली ऐसी होनी चाहिऐ जिससे पढ़ने वाले को उसकी बात पूरी तरह से समझ में आ जाए। शैली ही पत्र की आत्मा है।

सामाजिक क्षेत्र में पत्र का जितना महत्व है उससे कहीं ज्यादा सरकारी क्षेत्र में पत्र लेखन का महत्व है। सामाजिक क्षेत्र में आज फिर भी मोबाइल व टेलीफोन ने पत्र का स्थान ले लिया हो लेकिन सरकारी कार्यालयों में आज भी पत्र का बहुत अधिक महत्व है। एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय में किसी भी विषय में पत्र के माध्यम से ही कार्यों में समन्वय स्थापित किया जाता है। सरकारी कार्यालयों में पत्र लेखन की शैली भी साधारण पत्र लेखन से अलग होती है। सरकारी कार्यालयों में पत्र लेखन में पत्र के कुछ निर्धारित प्रारूप होते हैं। उन्हीं के आधार पर पत्र लिखे जाते हैं।

सरकारी क्षेत्र में एक कार्यालय से दूसरे कार्यालय को कई प्रकार के पत्र प्रेषित किये जाते हैं। एक कार्यालय में ही एक अनुभाग से दूसरे अनुभाग में भी पत्रों का आदान-प्रदान होता है। इसलिए सरकारी क्षेत्र में आज भी पत्रों का बहुत अधिक महत्व है।

इन पत्रों को लिखने में पत्र का प्रारूप (Drafting) निर्धारण बहुत महत्वपूर्ण होता है। पत्र को एक

शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह तो स्पष्ट है कि जहाँ रटने की शक्ति बढ़ती है वहाँ समझने की शक्ति मंद पड़ जाती है। हमारे मुल्क की संस्कृति एक ही है– यह हिंदी संस्कृति है।

– सरदार वल्लभ भाई पटेल

कार्यालय से दूसरे कार्यालय में प्रेषित करने से पूर्व सक्षम अधिकारी से उस पत्र को अनुमोदित करवाया जाता है। पत्र का प्रारूप उसमें सम्मिलित किये जाने वाली विषय-वस्तु इत्यादि के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु यहां दर्शाये जा रहे हैं जो एक पत्र को प्रभावी बना सकते हैं–

1. पत्र प्रारूप लेखन (Drafting) संबंधित अधिकारी/कार्यालय को उनसे प्राप्त पत्र के संबंध में प्रेषित किये जाने वाले निर्णय/आदेश को तैयार/बनाने संबंधी प्रक्रिया है।
2. जब एक प्रकरण सक्षम अधिकारी अपने निर्णय आदेश सहित पुनः संबंधित अनुभाग में प्रेषित करता है तो उस निर्णय को शासकीय सम्प्रेषण (Official Communication) का रूप देने तक की प्रक्रिया को पत्र प्रारूप लेखन (Drafting) कहते हैं।
3. टिप्पणी (Noting) एक कार्यालय की आन्तरिक कार्रवाई है जो कि कार्यालय के बाहर प्रेषित नहीं की जाती है जबकि कार्यालय से बाहर प्रेषित किये जाने वाले निर्णय/आदेश को मूर्त रूप देने में पत्र प्रारूप लेखन (Drafting) एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अतः Drafting स्पष्ट व निश्चित (Clear and unambiguous) होनी चाहिए।
4. पत्र प्रारूप उच्चाधिकारियों द्वारा स्वयं/अनुभाग द्वारा तैयार किया जाता है।
5. अनुभाग द्वारा पत्र प्रारूप तैयार किये जाने की स्थिति में स्वीकृति हेतु सक्षम अधिकारी को प्रस्तुत किया जाता है।
6. पत्र का प्रारूप बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि नोटशीट में दर्शाये गये तथ्य स्पष्ट रूप से उसमें शामिल किये गये हैं।
7. पत्र का प्रारूप बनाते समय पत्र जारी करने वाले अधिकारी के पदनाम के नीचे संबंधित सहायक व अनुभाग पर्यवेक्षक द्वारा दिनांक सहित हस्ताक्षर किये जाते हैं।
8. पत्र का प्रारूप सक्षम अधिकारी द्वारा अनुमोदन किये जाने के पश्चात् अन्तिम रूप से हस्ताक्षर किये जाने हेतु प्रस्तुत किया जाता है।
9. पत्र की संशोधित व शुद्ध प्रति पत्रावली में अंकित कर रखी जाती है।
10. अन्तिम रूप से प्रेषित किये जाने वाले पत्र की कार्यालय प्रति संलग्नक सहित (यदि हो) पत्रावली में रखी जाती है।
11. सक्षम अधिकारी पत्र के साथ संलग्नक पर यदि आवश्यक हो तो हस्ताक्षर करता है।

प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी चीज से नहीं।

–सुभाषचन्द्र बोस

12. साधारणतया, पत्र का प्रारूप तैयार करने हेतु समय निर्धारित होता है।

13. समयावधि की गणना अनुभाग में पत्र प्राप्ति की तिथि से की जाती है।

14. अत्यावश्यक प्रकरणों में यह अवधि एक कार्य दिवस की मानी जाती है।

15. निश्चित समय (Time-bound) वाले प्रकरणों में अवधि वही मानी जाती है जो पत्र में दर्शाई गई है।

16. यदि पत्र का प्रत्युत्तर देने हेतु कोई समय अवधि निर्धारित की जाती है तो उसका वर्णन पत्र में किया जाता है। जहां तक संभव होता है, अवधि के स्थान पर दिनांक को दर्शाया जाता है।

17. पत्र के प्रारूप (डी.एफ.ए.) पर फ्लेग लगाकर उस पर पत्र का प्रारूप "डी.एफ.ए." अंकित किया जाता है व फ्लेग को पिन किया जाता है।

18. पत्रावली में पृष्ठ सं. अंकित करते समय "सी" पत्र (लेटर) पृ.सं. के साथ अंकित किया जाता है।

साधारणतया पत्र प्रारूप के निम्न प्रकार हैं–

1. पत्र – Letter
2. कार्यालय ज्ञापन – Office Memorandum
3. अर्द्ध शासकीय पत्र – Demi-Official Letter (D.O. Letter)
4. अन्तर विभागीय टिप्पणी – Inter-departmental Note
5. ज्ञापन – Memorandum
6. कार्यालय आदेश – Office-Order
7. आदेश – Order
8. अधिसूचना – Notification
9. पृष्ठांकन – Endorsment

पत्र प्रारूप के संबंध में कुछ सामान्य निर्देश हैं जो निम्न प्रकार हैं–

1. एक ही पत्र बार–बार जारी करने की स्थिति में एक स्टैंडर्ड प्रारूप तैयार किया जाना चाहिये किन्तु यह प्रारूप उच्चाधिकारियों द्वारा स्वीकृत कराया जाना चाहिये।
2. पत्र की भाषा, संक्षिप्त, स्पष्ट व सही अर्थों वाली होनी चाहिये।

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिलों तक नहीं पहुँचा जा सकता। **–लोकार लुतने (जर्मन विद्वान)**

3. पत्र में साधारण भाषा छोटे वाक्यों में होनी चाहिये। यह आसानी से पढ़ने के लिये अनुच्छेदों में विभक्त की जानी चाहिये।

4. लम्बे वाक्यों, शब्दों की पुनरावृत्ति, अवांछित शब्दों इत्यादि को प्रयोग में नहीं लेना चाहिये।

5. पत्र व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, हवाई रूख व गन्दे शब्दों से मुक्त होना चाहिये।

6. जहां तक संभव हो, ''विषय'' पत्र के ऊपरी स्थान पर इस रूप में लिखा होना चाहिये ताकि पत्र के तथ्य आसानी से समझ में आ सकें।

7. पत्र के संबंध में, यदि कोई पूर्व पत्र है तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिये।

8. विषय के नीचे ही पत्र का संदर्भ अंकित कर दिया जाना चाहिये।

9. पत्र के साथ यदि कोई संलग्नक है, तो उसका भी उल्लेख किया जाना चाहिये व पत्र के अन्त में बांई तरफ ''संलग्नक–'' अंकित किया जाना चाहिये।

10. पत्र के ऊपरी हिस्से पर अत्यावश्यक होने की स्थिति में ''अर्जेन्ट'' ''मोस्ट अर्जेन्ट'' ("Urgent" "Most Urgent") एवं संदेश वाहक (Messenger) के साथ प्रेषित करने की स्थिति में ''विशेष संदेश वाहक द्वारा'' ("by Special Messenger") या ''स्पीड–पोस्ट द्वारा'' ("by Speed Post") इत्यादि अंकित किया जाना चाहिये।

सरकारी कार्यालयों में पत्र एक तरह से दस्तावेज के रूप में कार्य करता है। अतः इन पत्रों को लिखते समय उपरोक्त सावधानियों के साथ ही साथ लिखावट पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। ताकि भविष्य में इनकी आवश्यकता होने पर कोई भी व्यक्ति इन्हें आसानी से समझ सके एवं साक्ष्य के रूप में उपयोग में लाया जा सके।

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है, उसे यथोचित सम्मान दिया जाना चाहिए। **–स्वर्ण सिंह**

सृजनशील कथाकार के दर्शन की श्रृंखला : काल चिंतन (श्री राजेन्द्र अवस्थी)

संकलन : रीतिका मोहन
हिन्दी अधिकारी

आज की इस निरन्तर भागती ज़िन्दगी में यदि सुकून तलाशना हो तो साहित्य से बेहतर कुछ नहीं हो सकता। इसलिए मैं इस पत्रिका में एक सृजनशील कथाकार 'श्री राजेन्द्र अवस्थी' के मुक्त चिंतन की कृति 'काल-चिंतन' से उद्धरित दर्शन की श्रृंखला को अपने प्रबुद्ध पाठकों के लिए निरन्तर प्रत्येक अंक में प्रकाशित करने जा रही हूँ।

ईमान का दीपक

- वह रात भर दिये जलाती रही।
- वह रात भर तेल भरता रहा।
- वे सारी रात फुलझड़ियां चलाते रहे।
- बाहर रात्रि अंधकार का कफन ओढ़े निश्चित सोती रही। उसकी चादर में ज़रा भी न सरसराहट हुई और न सलवटें पड़ी।
- दूर कोई बार-बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ का गीत गा रहा था : 'सूरज की रोशनी का भार उठाए एक नन्हा-सा दिया अंधकार को भेद रहा है !'
- क्या सचमुच अंधकार को भेदना इतना आसान है?
- अंधेरा और प्रकाश पृथ्वी की परिक्रमा का एक क्षण है। कोई पृथ्वी की गति को रोक सका है?
- परंपराओं से बातें करने के हम आदी हो गये हैं।
- कान फोड़ती परंपराओं में अंधेरे को डूबते देखने का एहसास खुनखुने के साथ खेलना ही तो है!
- खेलना बुरा नहीं है, उससे सिद्धियों और सफलताओं की सार्थकता को खोजना अपने को भ्रम में डालना है।
- अंधेरा और प्रकाश अपने-अपने क्षणों में सार्थक हैं। एक दिया यदि अंधेरे को पी सकता तो जलता हुआ फासफोरस समूचे सूरज को अंधेरे में उतार सकता!

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिंदी ही हो सकती है।

–लाल बहादुर शास्त्री

- सब कुछ इतना आसान नहीं है। तब? आइए, विचार किया जाये, वह दिया कहां है, कौन-सा है, जो सही रोशनी देता है और अंधकार को उसी तरह खींचने की ताकत रखता है, जैसे गरम हवा सारी नमी को एक क्षण में पी जाती है।

- दूर पहाड़ की चोटी पर जलता हुआ दिया पथ-प्रदर्शक नहीं है, क्योंकि उसका अस्तित्व किसी के हाथों में है।

- दूसरों के गंतव्य को अपना संबल मानकर चलनेवाला उनसे बेहतर नहीं, जो दूसरों की जूठन पर पलते हैं। फूलों की सुगंध चुराकर नकली सेंट और इत्र बनाये जा सकते हैं, उन सेंटों और इत्रों से फूल नहीं बनाये जा सकते।

- राम, कृष्ण, ईसा और बुद्ध के बताये मार्ग जीवन की विभीषिकाओं में मरहम लगा सकते हैं, हमें वह स्थान नहीं दे सकते।

- इसीलिए अन्वेषक, शोधकर्त्ता, खोजी और मौलिक चिंतक अपने पदचिह्न अपने आप बनाते हैं। जीवन-निर्माण की इस कठोरतम विभीषिका में वे संघर्षों की चेतना से बीहड़ अंधेरे को मुट्ठियों में दबाकर पहले तेल निकालते हैं और फिर अपनी आत्म-ज्योति से उसमें वह दीपक जलाते हैं, जो उनकी समूची आत्मा और सच्चाई को आलोकित करता हुआ, उनके व्यक्तित्व को उद्‌भासित करता है।

- अंधकार पर विजय पाना उतना ही कठिन है, जितना प्रकाश को पराजित करने के सपने देखना।

- वास्तव में आसपास की दुनिया हमें इतना आत्मसात कर लेती है कि हम सच्चाई को खोज नहीं पाते।

- हमारे भीतर एक दीपक निरंतर जलता रहता है, जो अंधेरे कमरे के कोने में चमकती हुई हीरे की कनी की तरह सदाबहार प्रकाश से ओत-प्रोत है।

- हीरे की कनी को जितना तराशा जायेगा, प्रकाश उतना ही बढ़ेगा।

- उस भीतरी दीपक को छोड़कर कस्तूरी मृग की तरह हम नकली दीपकों के प्रकाश में परंपराओं की चट्टानें तोड़ा करते हैं।

- दीपावली के साथ कितने ही सार्थक संदर्भ जोड़े जायें, वह वास्तव में किसी सामंतशाही परंपरा का प्रतीक है।

- ऐसा न होता तो आज भी लक्ष्मी अंधेरे कमरों में रोशनी से दूर कैद न होती।

- स्वर्ण यदि प्रकाश का प्रतीक होता तो स्वर्ण-मुद्रापतियों के अक्षर इतिहास के अमर पृष्ठों में चमकते हुए दिखाई देते।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

–महर्षि दयानन्द सरस्वती

- सदियों से निरंतर प्रवाहमान सांस्कृतिक चेतना के केंद्र-बिंदु वे व्यक्तित्व रहे हैं जिनके पास न ऊपरी दिखावे के लिए कोई दीपक था और न जिनको लक्ष्मी की तलाश थी।
- वे बीहड़ वनों में वनचारी मृगों की तरह उन्मुक्त उछालें भरते हुए अपने पैरों से एक गीत को जन्म देते रहे, जो श्रम और सच्चाई का गीत था, जो उनके भीतर की ईमानदारी से उद्‌भुत हुआ था और जो हवा के साथ बहती रोशनी में दूर-दूर तक यूं गूंजा था जैसे वादियों में आवाजें झाई बनकर गूंजती रहती हैं।
- हम अपने प्रश्न के उत्तर के कगार पर खड़े हैं-यही वह दीपक है, जिसके प्रकाश में सार्थकता है।
- यह ईमान का दिया है।
- ईमान से टूटा आदमी छल, प्रपंच, संकट, अनास्था, अश्रद्धा और अंधकार से ग्रसित होता है। उसकी नियति वृक्ष से टूटे हुए उस फल की तरह है जिसे अपने जीवन का सारा सत्व देकर भी दूसरे आसानी से उठाकर खा लेते हैं।
- ईमान का विरोधी शब्द नहीं है।
- व्याकरण ने जो शब्द दिया है वह निरर्थक है, व्याकरण आखिर में एक मशीनी प्रक्रिया है। मौलिकता का वह विरोध करती रही है और अपने विरोध से हमेशा पराजित भी हुई है।
- सत्य तो यह है कि ईमानदारी से अधिक प्रकाशित और आलोकित शक्ति दूसरी नहीं है।
- यह निर्भीक आत्मा का अभिनंदन-द्वार है और मनुष्य-चेतना के प्रकाश की सत्य-किरण है, जो सहस्र सूर्यों की किरणों से भी अधिक दीप्तिमान है।
- आइए, रोज़ नहीं तो आज इस सच्चाई को हम पहचान लें।
- परंपराओं की मर्यादा बनाये रखने के लिए हम भले ही आज भी हज़ारों दीपक जला लें लेकिन अपनी पहचान खोजने की कोशिश हम उनमें न करें।
- हमारे भीतर की ईमानदारी दुनिया के समूचे अंधकार से एक-साथ लड़ने की सामर्थ्य रखती है।
- तो हम केवल एक दीपक ही जलायें और उसे ही अपनी जीवन-यात्रा का पथ-प्रदर्शक मान लें।
- ईमान के दीपक से बड़ा कोई दिया आज तक न स्थिर जल सका है और न अंधेरे को पी सका है।

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिन्दी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।

—लाला लाजपत राय

पन्ना धाय

इति शर्मा
लेखाकार

भारतवर्ष में आदिकाल से वर्तमान युग तक समय-समय पर नारी ने अपनी शक्ति व बुद्धिमता के बल पर कई ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया जो इतिहास के पन्नों पर अमिट हो गई। जब-जब अधर्म, अन्याय तथा असत्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचा है। तब-तब नारी शक्ति ने आगे बढ़कर धर्म, न्याय तथा सत्य को स्थापित करने में अपना भरपूर सहयोग दिया है। आदिशक्ति जगदम्बा ने सदैव मानवता की रक्षा के लिए दुराचारियों का दमन किया है। वेद-पुराणों में ऐसी अनगिनत कथाओं के प्रमाण हैं।

भारत में वीरांगनाओं व देशभक्त महिलाओं की कमी किसी युग में नहीं रही। अनेक ऐसी महिलाएं हुई हैं जिन्होंने अपने समय में देश व समाज का नेतृत्व किया है तथा एक नई दिशा दी। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात् जहाँ पर नारियों का सम्मान होता है वहीं पर देवताओं का वास होता है। इस सिद्धांत पर चलने वाला हमारा देश सदैव नारी-शक्ति को सम्मानित करता रहा है।

ऐसी ही नारी-शक्ति की मिसाल बलिदानी महिलाओं की श्रेणी में पन्ना धाय का नाम बहुत ही सम्मान से लिया जाता रहा है। पूर्ण रूप से देश को समर्पित एवं स्वामिभक्ति की मूर्ति पन्ना धाय को कौन नहीं जानता। पन्ना धाय एक ऐसी साहसी महिला थी जिन्होंने वक्त आने पर देश के लिए अपने पुत्र को भी हंसी-खुशी बलिदान कर दिया।

पन्ना धाय का जन्म पन्द्रहवीं शताब्दी में कमेरी गाँव के खींची जाति के राजपूत परिवार में हुआ था। उसमें साहस, उदारता, कर्त्तव्यपरायणता के गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे।

महाराजा संग्राम सिंह के बाद राजा विक्रमसिंह चित्तौड़गढ़ के राजसिंहासन पर बैठा। वह एक अयोग्य एवं अकर्मण्य शासक था। अतः कुछ समय बाद उसे हटाकर उसके छोटे भाई उदयसिंह को उसका उत्तराधिकारी घोषित किया गया। उस समय उदयसिंह की आयु मात्र छह वर्ष की थी। उसकी माता राजमाता करुणावती का निधन हो चुका था।

बालक उदयसिंह पन्ना धाय की गोद में पल रहा था। पन्ना धाय का स्वयं का पुत्र चन्दन भी उदय सिंह की

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।

–महात्मा गांधी

ही आयु का था। उदय सिंह के संरक्षण का उत्तरदायित्व दासी पुत्र बनवीर को सौंपा गया था। बनवीर एक स्वार्थी व्यक्ति था। एक दिन बनवीर ने उदयसिंह की हत्या करके उसके राज्य को हड़पने की योजना बनाई क्योंकि उसे मालूम था कि राजदरबार में उसका विरोध करने का साहस कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता।

पन्ना धाय उदयसिंह को अपने पुत्र से भी अधिक प्यार करती थी क्योंकि वह चित्तौड़ का भावी शासक था। पन्ना धाय को जब बनवीर की इस कुटिल योजना का पता चला तो वह बहुत चिंतित हुई। अतः उसने राजकुमार उदयसिंह को अपने पुत्र के कपड़े पहनाकर फलों की टोकरी में लिटाकर पत्तों से ढक दिया। साथ ही उसने उदयसिंह को दूध में नशीला पदार्थ भी पिला दिया था ताकि वह सोता रहे। पत्तों से ढकी टोकरी को अपनी विश्वासपात्र वीरा को सौंपकर उसे नदी के तट पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा। उधर दूसरी ओर पन्नाधाय ने अपने हृदय पर पत्थर रखकर उदयसिंह के कपड़े अपने पुत्र ''चंदन'' को पहनाकर उसे उदयसिंह के बिस्तर पर सुला दिया। वीरा के दुर्ग से बाहर निकल जाने पर पन्ना धाय बनवीर की प्रतीक्षा करने लगी। बनवीर अपनी योजना के अनुसार आधी रात को उदयसिंह के कक्ष में पहुंचा और बिस्तर पर लेटे ''चंदन'' को उदयसिंह समझ कर उसकी हत्या कर दी।

इधर पन्ना धाय को भय था कि कहीं बनवीर को चंदन और उदयसिंह के भेद का पता न चल जाए। उसने अपने पुत्र चंदन का अंतिम संस्कार नदी के तट पर कर दिया तथा ''वीरा'' से उदय सिंह को लेकर राज्य से बाहर निकल पड़ी।

पुत्र की मृत्यु के बाद पन्ना उदयसिंह को लेकर बहुत दिनों तक शरण के लिए भटकती रही पर दुष्ट बनबीर के खतरे के डर से कई राजकुल जिन्हें पन्ना को आश्रय देना चाहिए था, उन्होंने पन्ना को आश्रय नहीं दिया। पन्ना जगह–जगह राजद्रोहियों से बचती, कतराती भटकती रही। आखिरकार कुम्भलगढ़ में उसे शरण मिल गयी। उदयसिंह क़िलेदार का भांजा बनकर बड़ा हुआ। तेरह वर्ष की आयु में मेवाड़ी उमरावों ने उदयसिंह को अपना राजा स्वीकार कर लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उदय सिंह 1542 में मेवाड़ के वैधानिक महाराणा बन गए। पन्ना धाय ने जब उदयसिंह को राजसिंहासन पर बैठे हुए देखा तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। वह निहाल हो गई। उसका बलिदान सफल हो गया। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पूर्ण संतुष्ट हो गयी तथा ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद दिया। उसका महान बलिदान अमर हो गया। महाराज उदयसिंह ने भी पन्ना धाय को अपनी माता का सम्मान दिया तथा उनकी चरण रज अपने मस्तक पर लगाकर गौरवान्वित हुए। उन्होंने पन्ना धाय को राजमाता का सम्मान दिया। कुछ समय बाद पन्नाधाय की मृत्यु हो गई। महाराजा उदयसिंह ने ससम्मान उनका अंतिम संस्कार किया।

इस प्रकार बलिदान की मिसाल कायम करने वाली पन्ना धाय सदा–सदा के लिए अमर हो गई तथा अपनी स्वामिभक्ति, कर्त्तव्यपरायणता, साहस, त्याग और बलिदान के कारण युगों–युगों तक याद की जाती रहेंगी।

राष्ट्र की एकता को यदि बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।

–सुब्रहमण्य भारती

व्यथा

भारत भूषण शर्मा
आमंत्रित रचनाकार

हर किसी इंसान की जिदंगी में अलग अलग दौर जीवंत होते हैं जिनकी अपनी अपनी कहानी होती है, लेकिन इंसान का सबसे बुरा दौर वो होता है जिसमें वो अपने दिल की आवाज नहीं सुन पाता है, और ये बात मुझसे बेहतर कौन समझ सकता है लेकिन यह मेरी गलतफहमी उस दिन दूर हो गयी जिस दिन मेरी मुलाकात एक वृद्ध महिला से हुई जिसकी आयु तो ढलती जा रही थी लेकिन उसकी हिम्मत का आसमां बहुत बड़ा था। आमतौर पर इस आयु तक इंसान को सीढियों से उतरने के लिए भी सहारे की जरूरत होती है लेकिन इस उम्र में वो महिला एक कारखाने के रचनात्मक विभाग में सहायक के तौर पर कार्यरत थी। मेरी अभी-अभी उसी कारखाने में नियुक्ति हुई थी लेकिन उस कारखाने में कार्यरत रहना इतना आसान नहीं था क्योंकि उस समय ग्रीष्म ऋतु अपना कहर बरसा रही थी, मुझे कारखाने में प्रवेश करते समय ऐसा लगता था कि मैं सरहद पर लड़ने जा रहा हूँ लेकिन इंसान की जरूरतों के सामने ये मुश्किलें कोई मायने नहीं रखती हैं। ये मेरी प्रतिदिन की भावना थी जो हमेशा कारखाने में प्रवेश के समय मैं अपने आप से व्यक्त करता था लेकिन अंदर आने के बाद जब मैं उस महिला को देखता था तो मेरी हिम्मत काफी हद तक बढ जाती थी। वो मेरे नजदीक वाली टेबल पर ही कार्य करती थी, बड़े बड़े बरतनों की भारी पेटियों को उठाना, उसमें से सामान निकालना और उनकी अच्छी तरह से सफाई करना, ये सब कार्य वो महिला बिल्कुल आसानी से कर देती थी और दूसरी तरफ इन्ही कार्यों को करने में मेरी हालत इतनी खराब हो जाती थी कि मुझे सांयकाल तक सिरदर्द की गोली लेनी पड़ जाती थी। इन्हीं सब बातों से मेरी उस महिला से बात करने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी और इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैं चायकाल के दौरान उस महिला के पास गया और उससे पूछा– माताजी आप कहाँ से आते हो? मेरे इस जवाब पर उसने बड़ी मधुर वाणी में कहा– बेटा इस कारखाने से दूर एक कच्ची बस्ती है वहां से आती हूँ! फिर मैंने पूछा– आपके परिवार में कौन कौन है तो उसने प्रत्युत्तर में कहा– मेरे परिवार में तो काफी सदस्य हैं लेकिन मेरा साथ देने वाला कोई नहीं है! उस महिला का यह जवाब पारिवारिक रिश्तों पर एक प्रश्न उठा रहा था और इसी प्रश्न का जवाब जानने के लिए मैंने उनसे कहा– ''माताजी ये भाषा, थोड़ी मेरे दिमाग के स्तर के ऊपर है इसलिए आप जरा साफ-साफ शब्दों में बताइए!'' फिर उस महिला ने बड़ी संजीदगी के साथ जवाब दिया और कहा– बेटा, मेरे पति तो पिछले कई वर्षों से बिस्तर पर ही हैं और मेरा एक बेटा सड़क हादसे में इस दुनिया को अलविदा कह चुका है, रही मेरे दूसरे बेटे की बात तो वो तो न होने के बराबर ही है क्योंकि वो अपनी पत्नी के साथ अपनी एक अलग दुनिया बसा चुका है। इस पर मैंने उनसे

हिन्दी का शृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है, वह हमारी राष्ट्र भाषा है।

–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

कहा लेकिन आप इस उम्र में इतनी मेहनत कैसे कर लेते हो, मतलब आपको तकलीफ तो काफी होती होगी। उन्होंने कुछ उदासी भरी नजरों से मेरी और देखते हुए कहा– ''हाँ बेटा, तकलीफ तो बहुत होती है लेकिन इससे कहीं ज्यादा तकलीफ तब होती है जब मैं अपने पति को बिस्तर पर बेसुध अवस्था में देखती हूँ, तकलीफ तो बहुत होती है जब मैं अपने मरे हुए बेटे की तस्वीर के सामने रो भी नहीं पाती हूँ, तकलीफ तो बहुत होती है जब मैं अपने दूसरे बेटे की आँखों में अपने लिए नफरत देखती हूँ, तकलीफ तो बहुत होती है जब आँखे सहायता के लिए हाथ तलाशती हैं और कोई हाथ नहीं दिखायी देता लेकिन क्या करें बेटा काम तो करना पड़ता है। जिंदगी कैसी भी हो जीनी तो पड़ती है फिर मैंने उनसे कहा– आपके माता पिता कहाँ रहते हैं? मेरे पिताजी तो हैं नही और माँ है जो अपनी जिंदगी के आखिरी लम्हे जी रही है, बस बेटा, मैं तो अपनों के लिए ही जी रही हूँ। मेरा जीवन तो अब और कितना शेष है। इस पर मैंने कहा– माताजी आप के साथ ईश्वर है तभी तो आपके अन्दर इस उम्र में भी ये जज्बा है वरना हमारे जैसे लोगों की तो काम के नाम से ही रुह काँप जाती है। मेरी बात सुनकर उनके चेहरे पर थोडे हँसी के भाव दिखायी दिये, इस तरह से बात करते करते हमारा चायकाल खत्म हुआ। मैं इसी प्रकार प्रतिदिन उनसे बाते करता और उनकी सहायता करने की कोशिश में अपनी परेशानियों को थोड़ी देर के लिए भूल जाता। सच बात तो यह है कि उनके दुख और तकलीफों के सामने मेरी परेशानियाँ तो ऊंट के मुँह में जीरे के समान थी। मैं उनकी मदद करने की कोशिश तो करता था पर उन्हें मेरे द्वारा की गई मदद कभी भी स्वीकार नहीं होती थी लेकिन मैं भी जबरदस्ती उनकी मदद कर दिया करता था। इस माध्यम से मुझे भी एक पवित्र आत्मा का आर्शीवाद मिल जाता था। इसी तरह से समय निकलता गया और मैं उस महिला के और भी करीब आता गया। वो महिला मुझे अपने बेटे के समान समझती थी और मैं भी उनके दुख और परेशानियों का हिस्सेदार बनता चला गया लेकिन इंसान के जीवन का हर दिन एक जैसा नहीं होता इस बात का एहसास मुझे उस दिन हुआ जब मैं रोज की तरह कारखाने में पहुंचा और अपने काम में व्यस्त हो गया। कुछ समय पश्चात वो महिला मेरे पास आई और इससे पहले कि मैं कुछ बोलता उसने कुछ रूहांसा होकर मुझसे कहा– बेटा मुझे तेरी मदद की जरूरत है। मैंने तुरन्त कहा– हाँ बोलिए, आपको मुझसे कैसी मदद चाहिए। तब वे बोलीं– बेटा मेरी माँ की तबीयत बहुत खराब है और वो सरकारी अस्पताल में भर्ती है, उसने मुझे जल्दी अस्पताल में बुलाया है, शायद उसका अंतिम समय नजदीक है। अगर तुम मुझे अस्पताल तक पहुंचा देते तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी मुझ पर! इसके बाद उनके मुँह से कोई आवाज नहीं निकली बस उनके आसूँ ही हालात को बयां कर रहे थे। फिर मैंने उनके कन्धे पर हाथ रखकर उनको ढाढस बंधाते हुए कहा– माताजी आप चिन्ता मत करो हम अभी अस्पताल चलते हैं। मैं अभी गाड़ी का इतंजाम करता हूँ। ऐसी स्थिति में सिवाय एक इंसान के मेरी मदद और कोई नही कर सकता था और वो था मेरा प्रिय मित्र राकेश। एक वो ही था जिसने मुझे हमेशा सहारा देने की कोशिश की थी। फिर मैंने बिना देर किए राकेश को फोन लगाया तथा उसे सारी स्थिति का विवरण दिया और वो कारखाने पर आने को तैयार हो गया। फिर मैंने उस महिला से कहा– माताजी, चलो गाड़ी का इंतजाम हो गया है, हम कारखाने के प्रवेश द्वार पर चलते हैं। फिर मैं उस महिला को साथ

राष्ट्र भाषा का प्रचार करना– मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूं। **–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद**

लेकर प्रवेश द्वार की ओर चल पड़ा और कुछ ही देर में प्रवेश द्वार के सामने वाली सड़क पर राकेश अपनी गाड़ी लेकर आ गया और उसमें बैठकर हम अस्पताल के लिए रवाना हो गए। मैं गाड़ी में माताजी को सांत्वना देने की कोशिश कर रहा था लेकिन मेरे सारे प्रयत्न रेतीली मिट्टी की भांति हाथ से फिसलते नजर आ रहे थे। कुछ ही देर में हम अस्पताल के दरवाजे तक पहुँच गये। हमने शीघ्रता से माताजी के भाई से बात की और वार्ड तक गये जहां माताजी अपनी मां से मिलने को बेकरार थीं। मैं और राकेश वार्ड के बाहर ही रूक गये क्योंकि उस वार्ड के अन्दर जाने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई। अस्पताल में चारों तरफ लोग दुख, पीड़ा, बैचेनी से जूझ रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर मायूसी दिखाई दे रही थी। लेकिन तभी अचानक वार्ड के अंदर से हमारी सभी भावनाओं को चीरता हुआ एक करूण क्रंदन का स्वर उठा। मैंने और राकेश ने हिम्मत जुटाते हुए वार्ड के अन्दर प्रवेश किया। पूरे वार्ड में शोक की लहर थी। उस महिला की मां मर चुकी थी। वो माताजी और उनका भाई अपनी मां के गले लगकर विलाप कर रहे थे। माताजी से एक और सहारा छीन चुका था, उम्मीद की एक किरण जो अब धुंधली नजर आ रही थी। मेरी और राकेश की आँखे भी नम हो चुकी थीं। मेरी तो इतनी भी हिम्मत नहीं हुई कि मैं उस महिला के नजदीक जाकर उसे सांत्वना देता। जीवन की तरह ही मृत्यु भी एक सत्य है जिसको मनुष्य देखकर भी अनदेखा कर देता है। इसके बाद मैं और राकेश चुपचाप वार्ड के बाहर आ गये। मैंने राकेश से कहा– चल भाई, अब घर चलते हैं, अब हमारा यहाँ रूकना बेकार है। थोड़ी ही देर में हम घर पर आ गए क्योंकि मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मैं दोबारा कारखाने में जाता। अगले दिन रविवार का दिन था। मैंने किसी तरह से वो दिन गुजारा और सोमवार की सुबह वापस कारखाने की ओर प्रस्थान किया। जब मैं कारखाने के अन्दर गया तो मेरे होश उड़ गए। मैंने उस महिला को टेबल पर कार्य करते हुए देखा। मैं तुरंत उनके पास गया और उनसे कहा– माताजी आप यहां इतनी जल्दी ड्यूटी पर कैसे आ गए? शनिवार को तो आपकी मां का देहान्त हुआ था तो इस पर उन्होंने बड़ी गम्भीर वाणी में कहा– बेटा, जिदंगी का सबसे बड़ा सच यही है कि मौत के बाद भी ये जिंदगी रूकती नहीं है और जो जा चुका है उसके लिए मैं जिंदा लोगों के साथ विश्वासघात नहीं कर सकती और अपना कर्म नहीं करना, अपने आप से और लोगों के साथ किया हुआ सबसे बड़ा धोखा है। उनकी इस बात को सुनकर मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था। मैंने उन्हें अन्तरमन से नमन किया और इसके बाद मैं भी अपनी टेबल पर जाकर अपना काम पूर्ण निष्ठा के साथ करने लगा।

एक दिन हिन्दी एशिया ही नहीं, विश्व की पंचायत में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को ऊँचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने तथा संसार को सभ्य बनाने में उतनी सफल नहीं हुई जितनी आगे चलकर हिन्दी होगी।

–गणेश शंकर विद्यार्थी

मानवता का धर्म

सरला भगत
आमंत्रित रचनाकार

बात कई वर्ष पुरानी है। मैं अपने परिवार के 5 और सदस्यों के साथ मुम्बई से जयपुर के लिए आ रही थी। अतः बोगी की छह सीटें मेरे पिताजी ने आरक्षित करवा रखी थीं।

ट्रेन में भारी भीड़ थी, सीटों को लेकर कई यात्री आपस में उलझ रहे थे। कुछ प्यार से, कुछ खीज से आपस में एडजस्ट होने की जद्दोजहद कर रहे थे। हमने भी बैठने के लिए कुछ लोगों को जगह दी थी पर रात तक वे यात्री अपने गंतव्य पर ट्रेन से उतर चुके थे।

दिसम्बर का महीना था, सर्दी ने दस्तक दे दी थी। नौ बजते ही हम सब भी अपनी-अपनी बर्थ पर पसर गए। रात के अंधेरे में मैने ज्यों ही वाशरूम जाने के लिए पैर नीचे किए, आवाज आई सिस्टर जरा संभल कर यहाँ मैं लेटा हुआ हूं। मैने लाईट जलाकर नीचे देखा, एक 30-32 वर्ष का नवयुवक अखबार बिछाकर सो रहा था। मैंने कहा अरे भाईसाहब आप यहाँ क्यों सो रहे हो, क्या आपके पास टिकट नहीं है। उस युवक ने कहा टिकट तो है पर आरक्षण नहीं है। तब तक मेरे परिवार के सभी सदस्य भी जग गए। वह युवक मेरे पिताजी को बताने लगा कि साहब मैं जयपुरी चद्दरों का व्यापारी हूं और व्यवसाय के सिलसिले में मुझे कई बार जयपुर से मुम्बई आना-जाना पड़ता है इसलिए मैं टिकट लेकर ही यात्रा करता हूं। अगर आप इजाजत देंगे तो मैं यहाँ रात काट लूंगा।

भला आदमी जान मेरे माता-पिता ने उसे ऊपर की बर्थ पर सोने के लिए कहा और मेरी छोटी बहन को मेरे साथ एडजस्ट होने को। मैं दबे शब्दों में नकार रही थी कि अनजान आदमी के लिए हम क्यों अपना सुख छोड़ें, हमने तो आरक्षण के पैसे भी भरें हैं परन्तु मेरे पिताजी ने समझाया कि वह तुम्हारे भाई समान है। तुम अपने भाई के लिए जब कई बार त्याग करती हो तो यह तो कुछ घण्टों की ही बात है। अगर हमारे त्याग से किसी को खुशी मिलती है या सुख मिलता है तो वह खुशी ही हमारा संतोष है जिसकी महक हमारी आत्मा को ताउम्र महकाती है। हम सभी बच्चे अपनी माताजी से भले ही जिद कर लें परन्तु पिता की बात बिना किसी बहस के मान लेते हैं क्योंकि मेरे पिता ही मेरे आदर्श हैं। रात गहरी हो चली थी हम सब सो गए।

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सुबह जब हम लोग चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे, तब उस युवक ने बताया कि मेरा नाम चन्द्र प्रकाश है। मुझे पिछले दो दिन से तेज बुखार था इसीलिए मैं यहाँ आकर सो गया। आपने जो जगह दी उस कारण ही मैं आराम से सो पाया हूं। मैं नतमस्तक हूं आपकी दरियादिली पर, सच में आप बड़े दिल वाले हैं वरना आज के जमाने में कौन किसी अजनबी की इस तरह सहायता करता है।

उसकी बातें सुनकर हम सभी के मुख पर मुस्कान थी, उसके द्वारा वजह पूछने पर मेरे पापा ने उसे बताया कि मेरे पुत्र का नाम भी चन्द्र प्रकाश है और हमने तुम पर कोई अहसान नहीं किया है। इंसान ही इंसान के काम आता है। अरे बेटा यह तो मानवता है और मानवता तो हमारा धर्म है।

भारत में एक भाषा हिन्दी ही राष्ट्र भाषा का स्थान ले सकती है।
–डॉ. ग्रियर्सन

मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेशभक्त कहलाने लायक नहीं। बहुत से लोग ऐसा कहते सुने जाते हैं कि हमारी भाषा में ऐसे शब्द नहीं, जिनमें हमारे ऊँचे विचारों को प्रकट किया जा सके। किंतु यह कोई भाषा का दोष नहीं। भाषा का बनाना और बढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है। एक समय ऐसा था जब अंग्रेजी भाषा की भी यही हालत थी। अंग्रेजी का विकास हुआ कि अंग्रेज बढे और उन्होंने भाषा की उन्नति की।

–महात्मा गाँधी

क्रान्तिवीर चन्द्रशेखर आजाद

मदनलाल कोली
आमंत्रित रचनाकार

भारत वर्ष की पवित्र भूमि में कई महात्माओं–ऋषि–मुनियों के साथ ही साथ युद्ध कौशल का परिचय देने वाले वीर योद्धाओं का भी जन्म हुआ है। यहाँ एक ओर जहां गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, सन्त कबीर, गुरु नानक ने अपने ज्ञान का उपदेश देकर सम्पूर्ण विश्व को मानवता की सेवा करने का पाठ पढाया। वहीं दूसरी ओर कई देशभक्तों ने अपनी मातृभूमि को आजाद कराने के लिए संघर्ष किया उनमें, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, बाल गंगाधर तिलक, राजाराम मोहन राय, महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरु, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव और चन्द्रशेखर आजाद प्रमुख थे। इन देशभक्तों ने मातृभूमि को आजाद कराने में अपने प्राण तक निछावर कर दिये। इनके अथक प्रयासों से ही 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ और 26 जनवरी 1950 को इस देश का संविधान लागू हुआ। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में पूरे हर्षोल्लास से प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ। उनके पिता का नाम पण्डित सीताराम तिवारी तथा माता का नाम जगदानी देवी था। चन्द्रशेखर आजाद 14 वर्ष की आयु में बनारस गये और संस्कृत पाठशाला में पढाई की। वर्ष 1920–21 में वे महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से जुड़े। जब वे गिरफ्तार हुए तब जज ने उनका नाम पूछा तो उन्होंने अपना नाम 'आजाद' पिता का नाम –स्वतंत्रता' और जेल अपना निवास स्थान बताया। उन्हें 15 कोड़ो की सजा दी गयी, हर कोड़े के वार के साथ उन्होंने 'वन्दे मातरम्' का स्वर बुलन्द किया। इसके बाद वे सार्वजनिक रूप से 'आजाद' कहलाये। उनके जन्म स्थान भाबरा को अब 'आजाद नगर' के नाम से जाना जाता है।

आजाद, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट आर्मी से जुड़े रहे एवं रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में उन्होंने 1925 में काकोरी में अंग्रेजों की आंखों में धूल झोंककर वे फरार हो गये। साइमन कमीशन का विरोध कर रहे लाला लाजपत राय की पुलिस लाठीचार्ज में मौत का बदला लेने के लिए 17 दिसम्बर 1928 को चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और राजगुरु ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक जे.पी. सांडर्स के कार्यालय को घेर लिया और जैसे ही साण्डर्स अपने अंगरक्षकों के साथ स्कूटर पर बैठकर निकले वैसे ही राजगुरु ने पहली गोली दाग दी जो साण्डर्स के

सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसके द्वारा भाव–विनिमय से सारे भारत को सुविधा होगी।
–चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

माथे पर लगी। वह स्कूटर से नीचे गिर पड़ा फिर भगत सिंह ने आगे बढकर 4-6 गोलियां दाग कर उसे मार दिया। जब साण्डर्स के अंगरक्षकों ने उनका पीछा किया तो आजाद ने गोलियों से उन्हें भी समाप्त कर दिया।

27 फरवरी, 1931 को सुबह चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद में अपने सहयोगी सुखदेव एवं राजगुरु के साथ अल्फ्रेड पार्क पहुंचे। जब वे वहां पर वार्तालाप कर रहे थे तो किसी मुखबिर ने पुलिस को सूचना दे दी। जानकारी के अनुसार उस दिन जामुन के पेड़ के नीचे आजाद अपने साथी से वार्तालाप कर रहे थे तभी एक मुखबिर की सूचना पर डिप्टी एस.पी. ठाकुर विश्वेन्द्र सिंह और पुलिस अधीक्षक जॉन नॉट ने पूरे पार्क को घेर लिया था। जॉन नॉट बावर ने पेड़ की ओट लेकर चन्द्रशेखर आजाद पर गोलियां चलाई, जो उनकी जांघ को चीर कर निकल गयी। दूसरी गोली विश्वेन्द्र सिंह ने चलाई जो उनकी दाहिनी बांह में लगी। घायल होने के बाद भी आजाद बायें हाथ से गोली चलाते रहे और उन्होंने सुखदेव को वहां से भगा दिया। वह अपनी गोलियों से पुलिस को निशाना बनाते रहे, जब उनके पास अन्तिम गोली रह गयी तो उन्होंने उसे अपनी कनपटी पर दागकर जान दे दी। क्योंकि आजाद ने यह प्रण लिया था कि वे जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आयेंगे।

अंग्रेज आजाद से इतने भयभीत थे कि उनकी मौत के बाद भी उन पर कई गोलियां दागते रहे। आजाद महान देशभक्त थे उनकी शहादत को हम सभी आज भी नमन करते हैं।

हिन्दी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। इतने बड़े देश में जहां इतनी भाषाएं हैं, वहां देश की एकता के लिए आवश्यक है कि कोई भाषा ऐसी हो जिसे सभी बोल सकें, जो एक कड़ी की तरह सबको मिल-जुल कर रख सके, इसलिए हिन्दी को बढ़ाना हमारा कर्त्तव्य है।

–इन्दिरा गांधी

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेन्द्र सिंह मेहरा से वर्ष 2018-19 हेतु शील्ड व प्रशस्ति पत्र लेते हुए ''क'' वर्ग में प्रथम पुरस्कार विजेता कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) के कल्याण अधिकारी श्री जय सिंह रैगर

कार्यालय महालेखाकार परिसर में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह में मंचासीन चारों कार्यालयों के उच्चाधिकारीगण

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह पर माँ सरस्वती के आगे दीप प्रज्जवलित करते हुए उच्चाधिकारीगण

उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री सोहन लाल साहू एवं उप महालेखाकार (लेखा) सुश्री प्रीति आर जैन का स्वागत करते हुए कल्याण अधिकारी श्री जय सिंह रैगर

हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के 10 विजेता कार्यालय प्रधान से पुरस्कार राशि व प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए

मूल शब्द लेखन की चयन समिति के सदस्य
व.लेखाधिकारी श्री लहरी प्रसाद को
प्रशस्ति पत्र देते हुए कार्यालय प्रधान

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता
उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री सोहन लाल साहू
कार्यालय प्रधान से पुरस्कार प्राप्त करते हुए

विभागीय पत्रिका ''मरूलेखा वातायन'' के सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों को पुरस्कृत करते हुए कार्यालय प्रधान

सरस्वती वंदना प्रस्तुत करते हुए कार्यालय कर्मी

हिन्दी समापन समारोह का आनन्द लेते हुए
अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए
उच्चाधिकारी गण / अधिकारी गण

नन्हीं सी चिड़िया

कविता घरबारिया
आमंत्रित रचनाकार

मैं एक नन्ही सी चिड़िया हूं,
उड़ना मुझको भाता है।
धरा पर तो डर लगता है,
अम्बर ही सुहाता है।
उड़ते- उड़ते चाह है
मेरे पंजे में,
कर लू सभी चांद-सितारे।
मेरे भी अरमान हजारों,
हैं सपने प्यारे-प्यारे।
पिंजरे में मत कैद रखो तुम,
मुझको बस उड़ने दो।
प्यारी-प्यारी चीजें दुनिया की,
सब के दर्शन करने दो।

हिन्दी की प्रगति से ही देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी। **–डॉ. जॉकिर हुसैन**

अभिभावक बच्चों को प्रतिस्पर्धी के स्थान पर प्रगतिशील बनाएं

पदम चन्द गाँधी
आमंत्रित रचनाकार

यह बात सच है कि महान वह नहीं जो दूसरों के पदचिन्हों पर चले, महान तो वह है जो स्वयं अपने पग मार्क बनाये। आज का समय प्रतिस्पर्धा का है, तुलना का है, एक दूसरे की होड़ का है। हर कोई एक दूसरे से आगे निकलना चाहता है। इतना ही नहीं, हम अभिभावक भी अपने बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से करते हैं तथा बार-बार अपने बच्चों को श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं। बच्चों के द्वारा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना सर्वोत्तम है लेकिन दूसरों से तुलनात्मक श्रेष्ठ होना, दूसरों से अधिक अच्छा होना इस तरह की प्रतिस्पर्धा में बच्चों के अन्दर श्रेष्ठ गुण विकसित नहीं हो पाते। वे व्यवहारिक दृष्टि से भले ही अच्छा प्रदर्शन करते हों, लेकिन प्रतिस्पर्धा की इस भावना से उनके व्यक्तित्व का विकास अधूरा रह जाता है। मेरा ऐसा मानना है कि हम अभिभावकों/माता-पिता को निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है जिससे हमारे बच्चे प्रगतिशील और रचनात्मक बन सकें :

1. **अधिक अंक लाने का दबाव न बनाएं–** किसी बच्चे पर अधिक अंक लाने का दबाव उसे कई तरह की योग्यताओं को अर्जित करने की क्षमता से वंचित कर सकता है। यह वास्तविकता है कि हर बच्चे की बुद्धि, योग्यता व क्षमता भिन्न भिन्न होती है। ऐसे में दूसरे बच्चों से तुलना करके दबाव बनाना हमारे बच्चे के लिए घातक हो सकता है तथा उसके अन्दर नकारात्मक दृष्टिकोण पनपने का कारण बन सकता है।

अपने बच्चों को अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करना, उसकी क्षमताओं को विकसित करने हेतु प्रोत्साहित करना अच्छी बात है किन्तु उसके लिए हम अभिभावकों द्वारा लक्ष्य निर्धारित करना गलत है। इससे बच्चे कुंठित हो जाते हैं और वे जो करना चाहते हैं, जिस दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनकी वह क्षमता अवरूद्ध हो जाती है।

2. **असफलता मिलने पर संबल व सांत्वना देवें–** हर बच्चा अपनी क्षमता एवं योग्यता के अनुसार अपने माता-पिता की अपेक्षाओं पर, उनकी कसौटियों पर खरा उतरने का प्रयास करता है। यदि ऐसा नहीं कर पाता है तो वह बहुत निराशा, हताशा व ग्लानि महसूस करता है। ऐसे समय में बच्चों को अपमानित करने एवं डाटने के स्थान पर हम उन्हें सांत्वना एवं सम्बल देवें। ऐसी संवेदनशील स्थिति में वह घातक एवं गलत कदम उठा सकता है। हम अभिभावक इस बात का ध्यान रखें कि हर बच्चे में अपने मौलिक गुण होते हैं। तदनुसार ही उन्हें प्रेरित करना चाहिए।

देशभर को बांधने के लिए भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक-दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है। **–जवाहरलाल नेहरू**

3. **बच्चों की क्षमताओं को पहचानें–** यह बात कठिन अवश्य है लेकिन मुश्किल नहीं। बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता को समझने पर बच्चे बेहतर काम कर सकते हैं। उन्हें एक ही ढर्रे पर चलने के स्थान पर उन्हें अपने अनुरूप चलने, आगे बढ़ने के लिए हमें उन्हें प्रेरित व प्रोत्साहित करना चाहिए। अपने लक्ष्य उन्हें स्वयं निर्धारित करने और उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने देना चाहिए। हम अभिभावकों का यह प्रयास रहना चाहिए कि हमारे बच्चे दूसरों पर निर्भर न रहें बल्कि आत्म निर्भर होना सीखें। दूसरों की नकल करने के स्थान पर अपनी रचनात्मकता विकसित करें। हम अभिभावक बच्चों को उचित व अनुचित का भेद समझावें, उनकी कमियों का पता लगाकर समय रहते ठीक करें। क्षमता बढ़ाने के लिए उनके स्वास्थ्य एवं खाने–पीने का भी ध्यान रखें।

4. **बच्चों का मनोबल बढ़ावें–** आगे बढ़ने के लिए बच्चों को कदम कदम पर शैक्षिक और व्यवहारिक स्तर पर परीक्षाएं देनी पड़ती हैं जिसमें वे सफल या असफल कुछ भी हो सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा ''जीत गया वो विजेता लेकिन हारने वाला भी मार्गदर्शक होता है।'' यह भी सच है कि असफलता सफलता की कुंजी होती है। जीतने पर या सफलता पर अभिमान नहीं आए तथा असफलता पर निराश न हों, दोनों ही परिस्थितियों में बच्चों को सही मागदर्शन आवश्यक है। यह जरूरी है कि असफल होने पर हम अभिभावक उन्हें धिक्कारें नहीं बल्कि समझाएं और अधिक अच्छा प्रयास करने के लिए प्रेरित करें। उनकी मदद करें, उनको जरूरी सुविधाएं प्रदान करावें तथा सदैव उनके साथ रहें। हमारे बच्चे घबराएं नहीं इसलिए उन्हें समझाएं कि जिन्दगी के बहुत सारे मौके उनके लिए प्रतीक्षारत हैं तथा आगे बढ़ने के बहुत सारे क्षेत्र और भी हैं।

5. **बच्चों के व्यवहार एवं संगत पर पैनी नजर रखें–** बच्चों की समझ धीरे–धीरे विकसित होती है। उन्हें जो सिखाया जाता है वह सीख लेते हैं, अच्छे बुरे का फर्क उन्हें नहीं आता। इस कारण वे गलत संगत में पड़ सकते हैं। उनके व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है, उनके बातचीत का ढंग व्यवहार, तौर तरीकों में बदलाव आने लगता है, इन बातों पर हम अभिभावक पूरा ध्यान रखें। यदि हम अभिभावकों में स्वयं में बुराइयां है तो उनका भी असर इन बच्चों पर आता है जिससे सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाता।

बच्चों का विकास जीवन के हर आयाम में हो। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यवहारिक आयामों के साथ आध्यात्मिक आयाम का विकास भी उनके लिए जरूरी है, तभी हमारे बच्चों का व्यक्तित्व समग्ररूप से विकसित होगा। यह सब हम माता–पिता/अभिभावकों द्वारा प्रदत्त सही मार्ग दर्शन से ही सम्भव है। अतः अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हम अभिभावक अपने इस दायित्व को न भूलें और बच्चों को पर्याप्त समय भी दें।

हिंदी ही ऐसी भाषा है जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है।

–राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

गीत

डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
आमंत्रित रचनाकार

कितनों को हमने लोहे के, चने चबवाए हैं

इसीलिए हम भूमि भार को, हरने आए हैं

मुरझाई आशा की फसलें

कौन इन्हें सींचे

अपने रहे बुलन्द हौसले

लीक नई खींचे

अपना मन और कर्म निष्ठता सब अपनाए हैं

इसीलिए हम भूमि भार को, हरने आए हैं

कितनों के अहसानों की थी

सिर ऊपर छाया

छलने की छलनी में छलते

चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्त्तव्य हो जाता हैं कि वे हिन्दी को अपनी भाषा समझकर अपनाएं।

–डॉ. भीमराव अम्बेडकर

बिगड़ गयी काया

उनके मन की गहरी खाई, भरने आए हैं

इसीलिए हम भूमि भार को, हरने आए हैं

बार-बार पैबंद लगाए

मखमल चादर के

फिर भी मैल नहीं धो पाए

दुखी दिखे घर के

अरमानों की भूख मिटाने, अलख जगाए हैं

इसीलिए हम भूमि भार को, हरने आए हैं

खून पसीना भी पुरखों का

रग-रग में खौले

भेदों का 'अचूक' जो भेदी

खुले भेद हौले

जिस जिसने जो जो हथकंडे साथ निभाए हैं

इसीलिए हम भूमि भार को, हरने आए हैं।

राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रान्त की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

–सरदार पटेल

सिसकती जिन्दगी

हर्षित मोहन
आमंत्रित रचनाकार

''मनुष्य के जीवन में कभी कभी ऐसे मृत क्षण भी आते हैं, जब वह स्वयं को अत्यंत दिग्भ्रांत सा पाता है। उन क्षणों में होता या घटता कुछ भी नहीं, मिलता भी कुछ नहीं। जीवन एक बंद ठोस दरवाजे की तरह निःशब्द रूप से खड़ा रहता है फिर लाख उस पर अपना सिर पटको, धुनों पर कहीं से कोई आवाज देता या सुनता हमें नहीं मिलता।'' उपन्यास के अंत में लिखी हुई इन पंक्तियों को पढ़ते हुए आंखों के सामने एक चेहरा उभर आया और मन ने कहा कि नहीं, मनुष्य के जीवन में कभी-कभी नहीं बल्कि कुछेक मनुष्यों की जिन्दगी में तो हर समय ऐसे मृत क्षण से छाये रहते हैं और उसे दूर-दूर तक रोशनी की हल्की सी किरण भी दिखाई नहीं देती।

हर इन्सान की जिन्दगी में कुछेक चेहरे निश्चय ही ऐसे उभर कर सामने आते हैं जिनसे किसी भी प्रकार का लगाव तो नहीं होता लेकिन दिल के किसी कोने में उनके प्रति अथाह सहानुभूति अवश्य होती है। इन चेहरों में भी कोई एक चेहरा जिसे भुलाया न जा सके साथ ही जब कभी कुछ लिखने बैठो तो उसका व्यक्तित्व पेन की स्याही में घुलकर शब्दों के रूप में कागज पर उतरता ही चला जाता है मगर ऐसे लोगों की जिन्दगी के यथार्थ को जानने के लिए उनके विचारों की मिट्टी को छान-छान कर देखता होता है। ऐसा ही कुछ मैंने उस व्यक्तित्व को जानने के लिए किया और जो जाना वह गलत तो नहीं हो सकता मगर कम जरूर हो सकता है।

उसका अन्दाज ऐसा था जैसे कि वो मसरुफियत में वक्त को पी जाना चाहता हो मगर वास्तव में वह मसरुफियत नहीं थी बल्कि एक ताजी गम्भीरता थी जो ओढी नहीं जा सकती थी। वह सिर्फ जिन्दगी के यथार्थ से पहली मुलाकात पर ही आती है। उसके चेहरे पर मैंने हमेशा एक गहरा तनाव, तड़प, रोश और अफसोस हमेशा महसूस किया जो कि उसकी गहरी आंखों से टपकता रहता था।

वो हमारे मकान की ऊपर वाली मंजिल पर अपने तीन छोटे भाईयों, एक बहन और मां के साथ रहता था। उसका छोटा भाई जो मेरा हम उम्र था अक्सर नीचे चला आता और मुझसे बातें करता। उसी से ही पता चला कि उसके भैया को लिखने का शौक बचपन से ही था इसलिए वह अपने शौक को कायम रखते हुए पढ़ाई करता रहा मगर जैसे जैसे परिवार में सदस्यों की संख्या बढ़ती गई, भैया को परिवार की आर्थिक मदद के लिए छोटे-छोटे काम करने पड़े और पढ़ाई स्वयंपाठी के रूप में ही करनी पड़ी और फिर पत्रकारिता का कोर्स भी पत्राचार के माध्यम से करके वे पत्रकार बन गए और अपनी बेबाक राय और सच्चाई को उजागर करते रहे और ऐसी ही एक

सच्चाई पिताजी की मौत का कारण बन गई। इस संबंध में कुछ न कर पाने की विवशता ने उन्हें अंदर तक तोड़ दिया, उनके चेहरे पर मुस्कान ने आना ही बंद कर दिया, वे किसी से भी ज्यादा बात नहीं करते, पत्थर से बन गए थे। एक चुप सी लग गई थी उनके होठों पर। सुबह निकलते तो रात गए लौटते लेकिन हां घर का सारा खर्चा उन्होंने अपने ऊपर ले लिया था।

माँ ने एक बार पूछने की हिम्मत की कि वह कहां जाता है और क्या काम करता है तो इस पर भैया बोले– माँ तुम्हें कोई परेशानी हो तो बताओ, ये जानने की कोशिश मत करो कि मैं क्या करता हूँ और कहां जाता हूँ। मगर कब तक यह बात छुपी रहती। किसी से हमें पता चला कि भैया ने चाय की एक छोटी सी कैबिन खोल कर एक लड़का रख लिया है। कैबिन न केवल अच्छी चल रही थी बल्कि वहां सभी भैया से डरते भी हैं और भैया को दादा–दादा कह कर सम्बोधित करते हैं।

कब, क्यूं और कैसे लोग भैया से डरने लगे और उन्हें दादा कहने लगे, हमें आज तक नहीं पता। मगर हां सच तो ये है कि हमें भी उनसे डर लगता है। हालांकि कभी कुछ कहते नहीं है लेकिन उनके चेहरे पर छायी स्थायी कठोरता से डर सा लगता है।

उसके बारे में उसके भाई से इतना कुछ जान लेने पर मैंने महसूस किया कि उसके दिल पर बहुत भारी गुजरती है पर वह जाहिर नहीं होने देता। वह दुख को एक खाल की तरह ओढे रहता है तथा उसने मौन को ही अपना साथी बना लिया है। मुझसे रहा नहीं गया और एक दिन मेरे सामने पड़ जाने पर मैं उससे पूछ ही बैठा– ''ये आप हमेशा उदासी की शाल क्यों ओढ़े रहते हैं? इसकी जरूरत तो केवल मौसम आने पर ही पड़नी चाहिए।'' प्रश्न सुनते ही वह एक पल के लिए चौंका और मुझे असमंजस पूर्ण नजरों से देखता रहा मगर अगले ही पल वह शून्य में देखता हुआ बोला– मेरे जैसे अंधेरे जीवन में रहने वाले लोग अनुभव तो सब कुछ करते हैं मगर उसे शब्दों में कहना कठिन होता है। जिन्दगी में इतनी जल्दी इतना कुछ देख लिया और इसी तरह का जीवन रास आने लगा। मैंने कहा मगर यह भी तो सही नहीं है कि आप उदासी से जुड़े रहकर निरन्तर टूटते ही चले जाएं। जीवन को बदला भी तो जा सकता है और बदलना भी चाहिए लेकिन हाँ इसके लिए जरूरी है कि जिन्दगी को अच्छी तरह जाना समझा जाए। ऐसे शब्द, विचार और आदर्श प्राप्त किए जाएं जो हमें संघर्ष के लिए उठने की प्रेरणा दे सकें। आपका भी तो कोई आदर्श रहा होगा। मैं जिसे अपना सब कुछ, अपना आदर्श मानता था वह तो मेरे पत्रकारिता छोड़ कर, चाय की कैबिन चलाए जाने पर मुझसे बात ही नहीं करती, मुझसे कोई भी रिश्ता नहीं रखना चाहती। खैर मैं आपकी बातों को ध्यान में रखूंगा और अपने आपको बदलने की कोशिश करूंगा। ऐसा कहकर वह अपनी आंखों में आई हुई नमी को छुपाने के लिए तेजी से वहां से चला गया। उसकी वह भर्रायी हुई आवाज चीख चीख कर यह कह रही थी कि उसका आत्मविश्वास चोटें खाकर चूर–चूर हो गया है।

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

–सुभाषचंद्र बोस

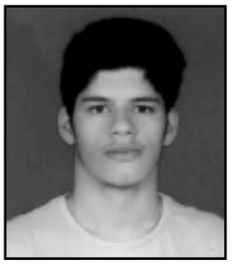

छोटू - एक बजरी तोता

ध्रुव नौटियाल
आमंत्रित रचनाकार

कुनाल, बचपन से ही अपने माता-पिता के साथ क्वींस रोड स्थित झाड़खण्ड महादेव मंदिर में सप्ताह में एक बार दर्शन के लिए अवश्य जाया करता था। बचपन से ही उसका यह क्रम जारी था। हाँ फर्क आया था तो केवल इतना कि अब वह अकेला भी अपनी बाइक से चला जाता, बड़ा जो हो गया था और फिर अपनी मनपंसद बाइक का भी साथ था। एक बार घर में सब बीमार पड़ गए थे, वायरल बुखार कुछ ऐसा फैला कि सारे घरवाले उसके चपेट में आ गए। पिताजी को ऑफिस से छुट्टियां लेकर जैसे-तैसे करके खाना बनाना पड़ा। यद्यपि वे इस काम में अभ्यस्त नहीं थे किन्तु मजबूरी में कोई और विकल्प नहीं था।

शनिवार का दिन था और कॉलेज की भी छुट्टी थी। पापा, मंदिर चलते हैं, कुनाल ने कहा और बाइक पर पिता को बैठा कर मंदिर चल दिया। मंदिर से लौटते समय सड़क के किनारे उसे एक खान साहब की ठेले नुमा दुकान दिखाई दी जिसमें नाना प्रकार के पक्षी जैसे, रंग बिरंगे बजरी तोते, लव बर्डस, कॉकाटेल, जावा, जेब्रा फिन्च और बहुत सारी किस्मों के कबूतर आदि थे। इन विभिन्न प्रकार के पक्षियों को देखकर कुनाल की बाइक स्वत: ही रुक गई और वह बड़ी देर तक पक्षियों के मोलभाव करता रहा। प्यारे-प्यारे, रंग-बिरंगे बजरी तोतों को देखकर तथा वायरल बुखार के कारण घर में छाई, मायूसी के वशीभूत होकर उसने बजरी तोतों का एक जोड़ा तथा पिंजरा खरीद लिया। खान साहब ने बताया, बजरी तोता आस्ट्रेलियाई पक्षी है, यदि इसे आपके घर में अनुकूल वातावरण मिलेगा तो यह बच्चे भी दे सकता है। कुनाल ने घर आकर पिंजरे में एक छोटी सी मटकी लटका दी, यह उन पक्षियों का नया घर था। सर्दियों के दिन थे वह रोज पिंजरे को धूप में रख देता और दादी को आवश्यक हिदायतें देकर कॉलेज चला जाता और लौटकर उनके साथ काफी समय व्यतीत करता। रविवार का दिन था कुनाल ने पक्षियों का दाना पानी बदला तथा एक पक्षी को हाथ में लेकर पुचकारने लगा। अचानक उसने हाथ में इतनी जोर से काटा कि उसकी पकड़ ढीली हो गई और अगले ही पल वह फुर्र हो गया। कुनाल अब बहुत उदास था, मन ही मन पछता रहा था कि क्यों उसने उसे पिंजरे से बाहर निकाला। अब पिंजरे में एक ही बजरी तोता था, अकेला और उदास,

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। उन भाषाओं के बीच में अंग्रेजी कैसे सम्पर्क भाषा बन सकती है, क्या दिल्ली का रास्ता लंदन से होकर गुजरता है, अंग्रेजी अलगाव पैदा करती-जनता और नेता के बीच राजा और प्रजा के बीच। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग भी दक्षिण की भाषा सीखेंगे। हिन्दी बढ़ेगी तो अन्य भारतीय भाषाएँ घटेंगी, यह कहना ठीक नहीं है, हिन्दी बढ़ेगी तो अंग्रेजी घटेगी या हटेगी यह ठीक है।

–आलफंत वात वेल, हॉलैंड

उससे भी ज्यादा उदास था कुनाल जो अपने आपको उसके अकेलेपन का दोषी ठहरा रहा था। वह बहुत बैचेन था, किसी काम में उसका मन नहीं लग रहा था, आखिरकार वह बजरी तोते लेने बाजार चला गया। न जाने कितनी पक्षियों की दुकानों की खाक छानी, कितना मोल भाव किया और अन्ततः तीन मन पसन्द स्वस्थ और सुन्दर बजरी तोते लेकर घर आ गया। अब उसके पास दो जोड़े बजरी तोते हो गए थे रंग-बिरंगे खूब चहकने वाले बजरी तोते। नित्य ही वह उनका दाना-पानी बदलता और पिंजरा साफ करता, उसे मानो एक नया रोजगार मिल गया था। घर का अन्य कोई कार्य वह करे या न करे, बजरी तोतों की देखभाल में बिल्कुल कोताही नहीं बरतता था। अब तो ये पक्षी घरवालों को भी अच्छे लगने लगे थे। दिन भर घर में उनका कलरव सुनाई देता, अड़ोस-पड़ोस के छोटे-छोटे बच्चे कौतुहलवश उन्हें देखने के लिए आते रहते। पिताजी भी सुबह का अखबार लॉन में उनके साथ बैठकर ही पढ़ते और साथ ही चाय की चुस्कियाँ लिया करते। धीरे-धीरे कई दिन बीत गए। बजरी तोते घर में एडजस्ट हो गए थे। उसने पिंजरे में दो छोटी-छोटी मटकियाँ भी लटका दी थी, अब वह इसी प्रतीक्षा में था कि कब इनके छोटे-छोटे बच्चे होंगे? घर के बड़े बुजुर्ग जब बच्चों की शादी कर देते हैं तो उन्हें तभी से घर में बच्चों की किलकारी सुनने की लालसा उत्पन्न हो जाती है। कुछ ऐसी ही इच्छा अपने बजरी तोतों के संबंध में उसे भी होने लगी थी किन्तु उसकी प्रतीक्षा लम्बी हो गई थी। वह प्रतिदिन यू-ट्यूब पर अनेक वीडियो देखता और उसमें बताये उपायों को अमल में लाता। बजरी तोतों को वह जहाँ पालक, हरा धनिया खिलाता वहीं सीड मिक्स अर्थात् कंगनी दाना, कुसुम दाना, बाजरा, जई, धान, सूरजमुखी के बीज भी खिलाता। वहीं कभी रोटी के टुकड़े, चावल और भीगी दालें भी खाने को देता किन्तु उसके मन की मुराद पूरी नहीं हो पा रही थी। पिंजरा या तो छोटा था या फिर घर वाले उसे इधर से उधर रखते रहते थे जिससे उन्होंने अभी तक अण्डे नहीं दिए थे। एक दिन उसने पिंजरे को एक ऐसे स्थान पर रख दिया जहाँ लोगों की आवाजाही काफी कम थी। पन्द्रह दिन बाद उसने देखा एक बजरी अपना बहुत सा वक्त मटकी ही में बिता रहा है, उत्सुकतावश उसने मटकी का मुँह खोलकर देखा तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था, मटकी में चार सफेद अण्डे थे। अब तो पाँच- सात दिन में वह मटकी का ढक्कन खोलकर जाँच कर लेता कि अण्डों की स्थिति कैसी है। ठीक बाइस दिन बाद उसने देखा कि एक छोटा सा बच्चा मटकी के तल में हिल-डुल रहा था। उसका लम्बा इंतजार समाप्त हो गया था और अब अन्य अंडों से भी बच्चे निकलने की प्रतीक्षा थी। किन्तु बहुत दिनों बाद तक भी अन्य अण्डों से बच्चे नहीं निकले, शायद वे खराब हो गए थे पर उसे कोई मलाल नहीं था। अब उसे उस दिन का इन्तजार था जब वह बच्चा मटकी से बाहर निकलेगा। एक-एक दिन बीत रहा था, वह दो-चार दिन में बच्चे को देख लेता। पन्द्रह दिन का समय व्यतीत हो गया था। आज शाम को उसने देखा कि बच्चे की माँ पिंजरे के फर्श पर बैठी है, ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। किसी अनहोनी के भय से वह चिन्ताग्रस्त हो गया। शाम हो गई थी इसलिए उसने किसी प्रकार की छेड़खानी नहीं की। दूसरे दिन कॉलेज से आने पर उसे पिंजरे के फर्श पर खून के धब्बे दिखाई दिए और बच्चे वाली मादा बजरी को उदास और गुमसुम

मेरा आग्रह पूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी भाषा के अध्ययन में लगाएँ। हम यही समझें कि हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

–विनोबा भावे

एक तरफ बैठा हुआ देखा। उसने उसे पकड़ कर अच्छी तरह जाँच की परन्तु खून के धब्बों का रहस्य उसकी समझ में नहीं आया। तीसरे दिन सुबह पुन: उसने पकड़ कर उसकी जाँच की और पानी पिलाने का प्रयास किया परन्तु वह वैसे ही गुमसुम और उदास बनी रही। अचानक कुछ समय पश्चात् उसने उसे बहुत तेज फड़फड़ाते हुए देखा, वह कुछ समझ पाता इससे पहले ही वह निस्तेज होकर पिंजरे के फर्श पर गिर गई, उसके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। वह तो सन्न ही रह गया था, मृत्यु से कदाचित यह उसका पहला ही परिचय था। बजरी का बच्चा होने की खुशी काफूर हो गई थी। अब उसे नई चिन्ता सताने लगी, बिना माँ का वह बच्चा भी अब शायद ही जीवित रहे। आज कॉलेज में भी उसका मन नहीं लगा, बार-बार मादा बजरी की मौत का मंजर उसकी आँखों के सामने आ रहा था और एक अज्ञात भय उसे डरा रहा था कि उस बिन माँ के बच्चे का क्या होगा। आते ही उसने सबसे पहले बच्चे की जाँच की। वह अन्जान, मटकी में हिल डुल कर अपने होने का सबूत दे रहा था। अभी तो उसके पँख भी नहीं आए थे, बस रूई के समान शरीर पर सफेद-सफेद रोंये थे। दो दिन तक उसने बच्चे की जाँच ही नहीं की क्योंकि बिना माँ के बच्चे का बचना कठिन ही नहीं नामुमकीन था। वह एक और अप्रिय घटना के लिए अपने आप को तैयार कर रहा था। तीसरे दिन उसने मटकी में देखा तो उसे सुखद आश्चर्य हुआ। बच्चा हिल-डुल कर अपने जीवित होने का प्रमाण दे रहा था। बिना माँ के खिलाए बच्चा तीन दिन से कैसे जीवित रह सकता है? यह बहुत ही रहस्यपूर्ण था। भगवान की अलौकिक शक्ति का एक नायाब नमूना और ''जाखो राखे सांइया मार सके न कोई'' वाली कहावत का जीता जागता प्रमाण। वह इस रहस्य को जानने के लिए व्याकुल था। अब उसने पिंजरे पर अपनी नजर पैनी कर दी। दूसरे दिन प्रात: उसने देखा नर बजरी मटकी में जाता और थोड़ी देर में बाहर निकल आता। अधिक गौर से देखा तो पाया कि नर दाना लेकर अन्दर मटकी में जा रहा है और अपने बच्चे को खिला रहा है। रहस्य से पर्दा उठ गया था। बच्चे के जीवित होने का कारण उसे समझ में आ गया था। मानव जीवन में किसी अबोध शिशु की माँ के मरने पर उसका पिता शायद ही बिना किसी स्त्री की सहायता के अपने शिशु को पाल सके, यह उसका मानना था।

अब पिता-पुत्र के संबंध में उसकी उत्सुकता कुछ ज्यादा ही बढ़ गई थी। जब भी मौका मिलता वह इनके व्यवहार को घंटों निहारा करता, बच्चा शनै:-शनैः बड़ा हो रहा था। वह पूर्ण स्वस्थ था। कभी मटकी में ही तेजी से पंख फड़फड़ाता, कभी मटकी के छेद से मुँह निकाल कर बाहर के नजारे देखता। एक दिन उसने देखा कि बच्चे का आधा शरीर मटकी के अंदर है और आधा बाहर लटका हुआ है, और पिता उड़कर कभी मटकी के उपर बैठता तो कभी सामने की दीवार पर, यह क्रम बड़ी देर तक चलता रहा। उसे आज कदाचित ऐसा ही एहसास हो रहा था जैसे एक पिता को अपने अबोध शिशु को पहली बार स्वयं के पैरों पर खड़ा होने पर होता है। अन्तत: बच्चे का संघर्ष मटकी के बाहर आकर समाप्त हो गया, वह पिंजरे में इधर से उधर उड़ रहा था। कुनाल की खुशी को शब्दों

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात् हिन्दी।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मे बयां करना मुश्किल था ऐसी खुशी लाखों रुपये खर्च कर भी खरीदी नहीं जा सकती है। उसने इस बजरी तोते के बच्चे का नाम रखा ''छोटू''।

छोटू अब पूरे परिवार का दुलारा बन गया था। हरा चारा यथा धनिया, पालक आदि देखते ही वह नाचने लगता। किसी अन्य बजरी तोते को पहले खिलाने पर वह नाराज हो जाता। समय के साथ छोटू ने एक मादा बजरी के साथ अपना गठबन्धन कर लिया था और कालान्तर में कई बच्चों का पिता भी बना। चार वर्ष बाद कुनाल के मकान में निर्माण कार्य चल रहा था। इस कारण पक्षियों के पिंजरे का कोई स्थायी स्थान नहीं हो पा रहा था। कभी यहाँ तो कभी वहाँ। पता नहीं कैसे एक दिन पिंजरे का गेट खुला रह गया और छोटू उस्ताद पिंजरे से बाहर। कभी इधर उड़ते कभी उधर। घरवाले छोटू-छोटू कह रहे थे, उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करे। अचानक उसने एक लम्बी उड़ान भरी और दूर निकल कर सबकी आँखों से ओझल हो गया। पीछे छोड़ गया अपनी बहुत सी यादें, जो कई वर्ष बीत जाने पर भी भुलाये नही भूलतीं।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

–महात्मा गांधी

हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य है। हिन्दी भाषा को अपनाने से ही समस्त भारत एक सूत्र में बंध सकता है। भारत की विभिन्न भाषाएं मोती की तरह बन कर हिन्दी रूपी धागे में पिरोने पर ही एक सुदृढ़ एवं सुन्दर माला का रूप ले सकती है। विश्व मानचित्र पर हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में चिन्हित हो ऐसा प्रयास प्रत्येक भारतीय को करना होगा।

–अज्ञात

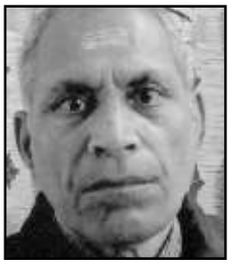

गंगा ही परम गति है

बनवारी लाल सोनी
आमंत्रित रचनाकार

युग-युग से ही गंगा जी को परम पवित्र और कल्याणकारी माना गया है। यह परमबंधु भी है और परम सुखों का भण्डार भी। गंगा-माता को परम तत्व भी कहा जाता है। यह परम मुक्तिदायिनी है। जो लोग माँ गंगा के प्रति समर्पित हैं वे इनका तट छोड़कर अन्यत्र निवास नहीं करते हैं। दुनियाँ यही कहती है कि वह देश धन्य है जहाँ गंगा बहती है। गंगा को तीनों लोकों (धरती-आकाश-पाताल) को तारने वाली कहा गया है। यद्यपि भिक्षा मांगने को नीच कर्म बतलाया गया है किंतु गंगा तट पर भिक्षा मांगने को बुरी दृष्टि से नहीं देखा जाता। यदि किसी का गंगा-तट पर प्राणांत हो जाए तो उसे सौभाग्यशाली माना जाता है। गंगा हमारी माँ है और हम उसकी सन्तान। ऐसे पवित्र स्थान पर दान-पुण्य, श्राद्ध और तर्पण भी महत्वपूर्ण बन जाते हैं। गंगा के नाम से मन को परम शांति मिलती है। जो लोग गंगा के नाम का नित्य जाप करते हैं उन्हें यमराज का भय व्याप्त नहीं होता, ऐसी मान्यता है। एक भक्त का कथन/इच्छा कुछ इस प्रकार है–

हे माँ गंगा! मैं तेरे तट पर वास करूं और तेरा अमृत जल पीऊं, तेरी तरंगों को भी देखता रहूं और तेरा नाम भी जपता रहूं। माँ गंगा! ये कलिकाल है, इसमें घोर पाप हो रहे हैं। मुझे पक्षी बना दीजिए ताकि मैं तुम्हारे तट पर स्थित वृक्ष की कोटर में वास कर सकूँ।

हे नरक निवारिणी जाह्नवी! मुझे अपनी भक्ति प्रदान करिए, आप मेरी माता हैं और मैं आपका पुत्र। गंगा जी की आराधना से त्रिविध (दैहिक-दैविक-भौतिक) ताप नष्ट हो जाते हैं। इसका जल औषधि से कम नहीं, इसके प्रयोग से बदन का नूर बढ़ता है। व्याधियों के ढेर, भीषण शोक-सन्ताप गंगा जी के जल से नष्ट हो जाते हैं, ऐसी मान्यता है। गंगाजी में स्नान किसी भी क्षेत्र में करें किंतु 'प्रयाग' को अवश्य याद करें, ये संतों का मत है। गंगा-स्नान से बढ़कर कोई लाभ नहीं, इससे मन में अनुराग की वृद्धि होती है। ऐसा कहा जाता है कि गंगा-स्नान का उचित समय है, जब नभ में तारे छिटकते हों। संत-मत के अनुसार ये उत्तम स्नान है। जब तारागण लुप्त हो जाएं, उस समय किया गया स्नान मध्यम कहलाता है, सूर्योदय के बाद का गंगा स्नान अधम कोटि का माना जाता है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिन्दी सम्पर्क भाषा बनकर रहेगी, किन्तु हिन्दी के प्रचार कार्य के लिए पारस्परिक सौमनस्य और धैर्य की जरूरत है। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए हमारे सामने राष्ट्र पिता का आदर्श उदाहरण है। उनकी हिन्दी की वकालत का अहिन्दी भाषी राज्यों तथा उनके साथ काम करने वालों पर बड़ा असर हुआ था।

–वी.वी. गिरि

भूलकर भी कभी भी गंगा–धार में वस्त्रों को न निचोड़ें, ये व्यवहार अनुचित माना जाता है। एक विशेष बात ये भी है कि गंगा जल का सेवन सदा चित्त लगाकर ही करना चाहिए, इससे भोग–मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है और परमात्मा शिव भी सहायता करते हैं, ऐसी भी मान्यता है।

यदि गंगा–तट पर जाकर पापाचार किया तो समझिए आना–जाना–नहाना तीनों ही बेकार हैं। जो उक्त नियमों का पालन नहीं करते उन्हें अनगिनत कष्टों का सामना करना पड़ता है।

दीन कुपात्रन, परम हित मानौ अति कल्याण।

गंगा, भारत–सांस है औ भारत की प्राण।।

हिन्दी की प्रगति से ही देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी।

– डॉ. जॉकिर हुसैन

हिन्दी साम्राज्यवाद नाम की न तो कोई चीज है और न ही उसे किसी ने देखा है। हिन्दी न तो किसी पर थोपी जा रही है, न ही थोपी जा सकती है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है, इसमें कोई दो मत नहीं हो सकते। हिन्दी एक सरल भाषा है और देवनागरी जैसी सरल लिपि तो शायद ही कोई हो।

–डॉ. प.आ. वारात्रिकोव, रूप

योग

रामानन्द
आमंत्रित रचनाकार

चिर युवा की सकल साधना
कर सकता क्या कोई इसका सामना।
धीरे-धीरे साधो इसको
'शीर्षासन' को तुम न सरल मानना।।

1. हर ब्रेक के बाद विज्ञापन
ऐसा ही है कुछ-कुछ 'शवासन'।
मयूर की तरह नृत्य करोगे
जब साधोगे तुम 'मयूरासन'।।

2. धरती को जैसे हल से जोते
'हलासन' में खाकर गोते।
संस्कारों की भाव-भूमि पर
तुम पादप-बीज यूँ बोते।।

3. योग भगाये, तन के रोग
यह है अजब संयोग।
तन को साधो, मन को साधो
स्वच्छ हवा का करो उपयोग।।

भारत की भावात्मक एकता का साधन हिन्दी ही हो सकती है। **– वैरन हालैंड**

4. प्राणायाम से मिले आराम
करते रहो, तुम सुबहो-शाम।
अनुलोम-विलोम की डगर निराली
कर सकता है हर खास-ओ-आम।।

5. ऊँचे स्थानों पर ले जाता
सर्दी में प्राणायाम 'उज्जयी'।
ठण्ड विकट हो, या कि कफ हो
दोनों पर करता विजयी।।

6. सकल ब्रह्मांड की सैर कराता
रूधिर-प्रवाह को तेज बनाता।
'योगी' उसको कहते 'राजा'
शीर्षासन जब खुद सध जाता।।

7. गर्मी के हों गर्म थपेड़े
या फिर हो सर्दी की शाम।
ध्यान लगाकर, योग लगाओ
शिथिल बनाता हर प्राणायाम।।

हिन्दी में जो रस है, उसका आस्वादन करना चाहिए। हिन्दी एक मीठी भाषा है, इसे बोलने का आनंद लेना चाहिए। हिन्दी की मेरी जानकारी अधूरी होती हुई भी मुझे बहुत कुछ दे चुकी है।

–डॉ. रूपर्ट स्नेल, ब्रिटेन

सोचो

तुलसी राम धाकड़
आमंत्रित रचनाकार

धन के पीछे भागम-भागी
ऐसी कौनसी लालसा जागी
चिंतित-सा चेहरा लगता है
सोचो दिन-भर क्या करता है

परेशानियाँ सबको आती
करो सामना क्यों डरता है
क्योंकर स्वास्थ्य गिरा लगता है
क्यों अपने मन में घुटता है

करो काम निःस्वार्थ-भाव से
बहुजन हिताय के शुद्ध भाव से
बालों को उड़ने से रोको
रोगों को योगों से रोको

मन की चँचलता को रोको
वाचाल नहीं-वाणी को रोको
व्यर्थ बात से खुद को रोको
झगड़े में पड़ने से रोको

समय नष्ट करने से रोको
ज्यादा खाने-सोने से रोको

अब भी मैं यही कहता हूं जो पहले कहता था कि हिन्दी सब को सीखनी चाहिए। **–चक्रवर्ती राजगोपालाचारी**

उपदेश–व्यर्थ देने से रोको
भ्रष्ट–कार्य करने से रोको

धन की बरबादी को रोको
दुराग्रह–दुस्साहस रोको
नैराश्य–भावना को भी रोको
कुछ अच्छा करने की सोचो

क्रोध–भावना को भी रोको,
अशुद्ध खान–पान को रोको
दुष्कृत्य करे जो उसको रोको
समाज–सुधारने की सब सोचो

मिलावट के ज़हर को रोको
बढ़ते अपराधों को रोको
बाल–विवाह उत्पीड़न रोको
सदा–स्वच्छ रहने की सोचो

बढ़ती दहेज–प्रथा को रोको
स्त्रियों पर जुल्मों को रोको
बाल–यौन–शौषण को रोको
प्रतिदिन शुभ–दिन हो, यह सोचो

पर्यावरण–प्रदूषण रोको
जल–संरक्षण कभी ना रोको
प्रसवकाल की मृत्यु रोको
चिकित्सा–सुविधा सुलभ हो, सोचो

देश को एकसूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है। **– लालबहादुर शास्त्री**

नव–समाज–सृजन की सोचो
राम–राज्य लाने की सोचो
मन से सद् करने की सोचो
पर–हितार्थ करने की सोचो

सुख–शान्ति का मार्ग ना रोको
चलो अनवरत–रुको ना रोको
शिक्षा–अभियान कदापि ना रोको
ज्ञान–ग्रहण करने की सोचो

महाअज्ञान–तिमिर को रोको
अधर्म–पाप करने से रोको
धर्माचरण करने की सोचो
ज्ञान और भक्ति मिले, यह सोचो

दुर्लभ–देह मिली है– सोचो
मानव–हित की बातें सोचो
महान्–कार्य करने की सोचो
प्रभु को अर्पण करने की सोचो

मैं क्यों जन्मा हूँ यह सोचो
सफल–सार्थक जीवन हो, सोचो
इसकी क्षण–भंगुरता भी सोचो
श्री राम–नाम जपने की सोचो।

हिन्दी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है, उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए। **– सरदार वल्लभभाई पटेल**

हिंदी पखवाड़ा-2019

राजभाषा कक्ष

महालेखाकार भवन में स्थित चारों कार्यालयों- कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सा.एवं सा.क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, कार्यालय महालेखाकार (आ. एवं रा.क्षे. लेखापरीक्षा) राजस्थान एवं कार्यालय प्रधान निदेशक (केंद्रीय) शाखा जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 02.09.2019 से 16.09.2019 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। जिसका शुभारंभ दिनांक 02.09.2019 को तथा समापन दिनांक 16.09.2019 को उच्चाधिकारियों द्वारा किया गया।

पखवाडे के दौरान 3 सितम्बर को हिंदी अनुवाद एवं हिंदी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता, 5 सितम्बर को हिंदी स्व-रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता, 6 सितम्बर को हिंदी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता, 9 सितम्बर को हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता, 11 सितम्बर को हिंदी में कंप्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता एवं 'कवि सम्मेलन' आयोजित किया गया तथा दिनांक 12 सितम्बर को हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई।

समापन समारोह का प्रारम्भ माँ सरस्वती के चित्र को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया और साथ ही माँ सरस्वती की वंदना भी की गई। इसके पश्चात् माननीय केंद्रीय गृहमंत्री का संदेश पढकर सुनाया गया एवं चारों कार्यालयों में सम्पन्न हिंदी की गतिविधियों का वाचन किया गया।

समारोह के दौरान हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई एवं इसके विजेताओं व हिन्दी में अन्य प्रतियोगिताओं के चयनित कर्मियों को पुरस्कार प्रदान किये गए। इस अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) के दस कर्मियों को हिंदी में मूल शब्द लेखन : सर्वाधिक कार्य हेतु नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र तथा इसके चयन हेतु गठित कमेटी के दो सदस्यों को भी मानदेय व प्रशस्ति पत्र दिये गए। साथ ही विभागीय हिंदी अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'मरुलेखा वातायन' के चार सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों व इसकी चयन समिति के सदस्यों को मंचासीन विभूतियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। कल्याण अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित कर, हिंदी पखवाड़ा समारोह को सफल बनाने के लिये समस्त उच्चाधिकारियों, अधिकारियों व कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा-2019 के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके परिणाम

क्र.	प्रतियोगिता	निर्णायक	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1.	हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता	श्री राजीव भाटिया व.लेखापरीक्षा अधिकारी श्री कुलदीप जोशी सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	श्री गौरव कुमार प्रजापत लेखा परीक्षा अधिकारी	श्री विजय कुमार अग्रवाल व.लेखापरीक्षा अधिकारी	श्री भगवानदास विश्नदासानी आशुलिपिक
2.	हिंदी टिप्पण-प्रारूपण प्रतियोगिता	श्री मनोहर लाल मीणा व.लेखापरीक्षा अधिकारी श्री स्वामी प्रसाद व.लेखाधिकारी	सुश्री शिवपाली खण्डेलवाल लेखापरीक्षक	श्री विक्रम भारती एम.टी.एस.	श्री रविशंकर विजय वरि.लेखापरीक्षक
3.	हिन्दी स्व-रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	श्रीमती रीतिका मोहन हिन्दी अधिकारी श्रीमती उषा सुरेन्द्रन सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	सुश्री शालिनी अग्रवाल व.लेखापरीक्षक	श्री रविशंकर व.लेखापरीक्षक	श्री हनुमान गुप्ता सहा.लेखाधिकारी
4.	हिंदी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता	श्री राजेश कुमार दया व.लेखापरीक्षा अधिकारी श्री ओ.पी. पारीक सहा.लेखाधिकारी	श्री रजनीश शर्मा लेखापरीक्षा अधिकारी	सुश्री शिवपाली खण्डेलवाल लेखापरीक्षक	सुश्री ऋचा शर्मा लेखाकार
5.	हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता	श्री विनोद कुमार पारीक कल्याण अधिकारी श्री अरूण कुमार शर्मा व.लेखापरीक्षा अधिकारी	सुश्री शालिनी अग्रवाल वरि.लेखापरीक्षक	सुश्री ज्योति एम.टी.एस.(लेखा व हक.)	श्री दिलीप शर्मा व. लेखाकार

6.	हिंदी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता	श्री जय सिंह रैगर कल्याण अधिकारी श्री मनीष श्रीवास्तव सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी श्री वीरेन्द्र सिंह सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	श्री संतोष कुमार बूला सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	श्री अमित सिंघल सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी	सुश्री ज्योति सैनी एम.टी.एस.(लेखा व हक.)

पुरस्कृत रचनाकार

वर्ष 2018-19 के लिए हिन्दी छःमाही पत्रिका ''मरुलेखा वातायन'' के पुरस्कृत रचनाकार एवं चयन समिति के सदस्य–

क्रम.सं.	नाम	पदनाम	राशि
1.	सुश्री दीक्षा शर्मा	आमंत्रित रचनाकार	₹ 1000/-
2.	श्री बालकृष्ण शर्मा	लेखाधिकारी	₹ 1000/-
3.	श्री शैलेन्द्र कुमार शर्मा	स.लेखाधिकारी	₹ 1000/-
4.	श्री शंकरलाल	एम.टी.एस.	₹ 1000/-

मूल्यांकन समिति के सदस्य–

1.	श्री सोहन लाल साहू	उप महालेखाकार (प्रशासन)	₹ 1000/-
2.	श्री जय सिंह रैगर	कल्याण अधिकारी	₹ 1000/-
3.	श्री नरेन्द्र कुमार मिश्रा	व. लेखाधिकारी	₹ 1000/-
4.	श्रीमती रीतिका मोहन	हिन्दी अधिकारी	₹ 1000/-

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत कार्यालयकर्मी

दो– प्रथम पुरस्कार ₹ 5000/– प्रत्येक को

1.	श्री रंजन कुमार	लेखाकार
2.	श्री ज्ञानेश शर्मा	लेखाकार

तीन– द्वितीय पुरस्कार ₹ 3000/– प्रत्येक को

1.	श्री राकेश सैनी	स.ले.अ.(त.)
2.	श्रीमती हेमलता सोनी	व. लेखाकार
3.	सुश्री गीता	डी.ई.ओ.

पाँच– तृतीय पुरस्कार ₹ 2000/– प्रत्येक को

1.	श्री रामधन मीणा	व.लेखाकार
2.	श्री हरीश चंद्र गुप्ता	व.लेखाकार
3.	श्री संजीव शर्मा	लेखाकार
4.	श्री राजकुमार वर्मा	लेखाकार
5.	श्रीमती विद्या	लिपिक

दो मूल्यांकन समिति के सदस्य, मानदेय ₹ 1000/– प्रत्येक को

1.	श्री लहरी प्रसाद	व.लेखाधिकारी
2.	श्री प्रभू लाल कायत	व.लेखाधिकारी

विभागीय खेलकूद गतिविधियां

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता स्थल	प्रतियोगिता तिथि	प्राप्त स्थान
1.	पश्चिमी क्षेत्र क्रिकेट प्रतियोगिता	ग्वालियर	12.02.2019 से 14.02.2019	–
2.	पश्चिमी क्षेत्र बैडमिंटन प्रतियोगिता	भोपाल	19.09.2019 से 21.09.2019	–
3.	पश्चिमी क्षेत्र हॉकी प्रतियोगिता	रायपुर	25.09.2019 से 26.09.2019	विजेता
4.	पश्चिमी क्षेत्र कैरम प्रतियोगिता	नागपुर	31.10.2019 से 02.11.2019	–
5.	अन्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता	नई दिल्ली	13.12.2019 से 15.12.2019	–

वर्ष 2019 में सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम	पद	सेवानिवृत्ति/मृत्यु की दिनांक
	सर्वश्री/श्रीमती		
1.	पाँचू लाल मीणा	वरिष्ठ लेखाकार	31.01.2019
2.	लक्ष्मी नारायण सैनी	वरिष्ठ लेखाकर	01.02.2019 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
3.	अमर चन्द मीरवाल	वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2019
4.	अजीमुद्दीन खॉन	स. लेखाधिकारी	28.02.2019
5.	राम किशोर गुप्ता	एम.टी.एस	31.03.2019

	सर्वश्री/श्रीमती		
6.	गंगा दीन	वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2019
7.	मुकेश चन्द	एम.टी.एस.	31.05.2019
8.	सुषमा गुप्ता	पर्यवेक्षक	31.05.2019
9.	किशन लाल दुलारा	वरिष्ठ लेखाकार	30.06.2019
10.	जगदीश चन्द पारगी	लेखाधिकारी	30.06.2019
11.	अशोक कुमार सामरिया	वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2019
12.	प्रकाश चन्द	एम.टी.एस.	31.07.2019
13.	लाला राम मीणा	वरिष्ठ लेखाकार	25.08.2019 (मृत्यु दिनांक)
14.	पूनम चन्द जैन	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2019
15.	भैरू लाल मीणा	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2019
16.	द्वारिका प्रसाद मीणा	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2019
17.	शिव कुमार पारीक	वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2019
18.	बुद्धी प्रकाश शर्मा	डिस्पेच राईडर	31.08.2019
19.	श्रवण सिंह भाटी	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2019
20.	किशन सिंह राजपूत	वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2019
21.	अशोक कुमार शर्मा	लेखाकार	30.09.2019
22.	अनिल कुमार सक्सैना	वरिष्ठ लेखाधिकारी	30.09.2019
23.	भँवर सिंह	एम.टी.एस.	30.09.2019
24.	श्याम लता रस्तोगी	वरिष्ठ लेखाधिकारी	30.09.2019 (मुख्यालय से सेवानिवृत्त)
25.	चन्द्रशेखर-।	वरिष्ठ लेखाकार	30.11.2019
26.	किशन चन्द जैन	वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2019
27.	रतन सिंह	वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2019
28.	मदन लाल बैरवा	वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2019

महालेखाकार (ले. व ह.) एवं अध्यक्ष, श्री डी.पी. यादव नराकास (का–1) की
77वीं अर्द्धवार्षिक बैठक को संबोधित करते हुए

महालेखाकार (ले. व ह.) श्री डी.पी. यादव सतर्कता जागरुकता सप्ताह– 28 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2019
के अन्तर्गत आयोजित कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए

भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग (आई.ए एंड ए.डी) पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता की विजेता टीम,
अधिकारियों व शील्ड के साथ मध्य में महालेखाकार (ले. व ह.) श्री डी.पी. यादव

मरूलेखा वातायन

आर.एन.आई. 95305/98 वर्ष- 23, अंक : 67

अल्लेप्पी : केरल